२२३
कहानी

# उणियारा

शिवराज छंगाणी

७२१८
२।२।७०

कल्पना प्रकाशन, बीकानेर

प्रकाशक
कल्पना प्रकाशन
कृष्ण कुंज, बीकानेर

© शिवराज छंगाणी

प्रथम संस्करण

मूल्य : तीन रुपये मात्र

मुद्रक
नीलम आर्ट प्रेस,
दाऊजी का मन्दिर, बीकानेर

UNI jasthani Sketches)

223
कहानी

6298
5/5/60

# पतियारै रा बोल

राजस्थानी भासा रा मानीता कवि अर लेखक श्री शिवराज जी छंगाणी री पोथी 'उजियारा' री रचना वा बाच-जांच नैं जो सोरो हुयो। राजस्थानी गद्य री समरसता अर इकजाई पण री ओळख मन्नै इणैं कृति नैं पढ़ियां हुयी। संस्कृत साहित्य-शास्त्रयां, कविता री कसौटी गद्य नैं मानी है। आ बात भासरै-भासरै साची है। जिणै तांई चोखा निबंध, नाटक, रेखा-चित्र, जीवणी लेख, उपन्यास अर कथा-रिपोर्ताज, आपणी भासा में नीं सिर जीजसी उठै तांई आपणी साहित्य-यात्रा रो रथ तेजी सूं आगै नीं बध सकैलो। आज जद कै राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति रै दरवाजै माथै नुवैं जुगरो हैलो पूरीजरयो है, संक्रमण री आंधी परम्परा रा बूढा रूंखा नैं सपेटै में लेयरी है, उण घडी जिका राजस्थानी सिरजण-हार मैसाणी थाम्यां रचना-मीण है वणां री जुग-जैकार।

श्री शिवराज जी रै लेखण सूं राजस्थानी रै नुवैं साहित्य खेत' घणी उमींदां है आं री लिखावट साफ-सादी पण पूरी असरदार, चतरं मर मांयली मार म्हारी है। 'उणियारा' रा रेखा-चितरामां में ति पकड़ जिसी मनोवेगकारी रचना म्हारा मगजी तो 'नागणी', 'नालियो सैंदी' अर 'पत्ती रा रमा'र' सरणा जूना-जबरा संस्मरणां री मोन सखरा रेखा- चितराम भी।

इयैं सरावण जोग सिरजण सारू श्री ढूंगाणी जी नै घणैं मान वधाई। ओ पतियारो म्हूं राखूं हूं क' इयैं तरैं री नुवी विधावां पाती राजस्थानी री युवा पीढ़ी आप रो पूरो ध्यान-सरंजाम जुटासी। आ पोथी पाठकां नै रूचसी, विद्वानां सूं आदरीजसी, इण भरोसे सागै—

डा. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया
निदेशक
राजस्थान साहित्य अकादमी ( संगम )
उदयपुर

प्रकाशकीय

२२३
छंगाणी

## प्रकाशकीय

मरुस्थल प्रकाशन अपनी परम्परानुसार राजस्थानी भाषा के सशक्त कवि, गीतकार एवं कथाकार श्री शिवराज छंगाणी के प्रथम रेखा चित्रों का संकलन प्रस्तुत करते हुए गौरव अनुभव कर रहा है। इस अवसर पर श्रद्धेय गुरुजी श्री भवानी शंकर व्यास 'विनोद' एवम् श्री ओंकार पारीक का जो सहयोग मिला है उसके लिए हम आभारी हैं।

—कृष्ण जनसेवी

# टूकै में

राजस्थानी सूं म्हारो लगाव ऊपर छाळो नईं हुयर हिरदै सूं है।
…पणै सूं लैयर अबार तईं घर रै आंगण सूं लैयर कवि सम्मेलनां रै मंच
…र विचार गोस्ठियां में म्हारै इण संस्कारां में वढ़ोत्तरी हुयी है।

मनै तुतळावण सूं लेयर जीवण जगत रा व्यौवार मांय काम-काज में आवण आळी भासा रै रूप नै ओळखणै रो सुभाग मिल्यो है।

घणखरो परभाव है वां री चरचा करणी अदब समझूं जिणां में कवी नो मायड़-भासा री सेवा सारू वीर हाडा ज्यूं जीवण निछरावळ करणै रो आदर्स धरपरैयो है। इणां में राजस्थानी रा वयो वृद्ध लेखक श्री मुरलीधर जी व्यास अर श्री भतमाल जी जोसी रा रूप आख्यां आगै हमेसा बण्या रैवै।

दूजो परभाव वां रो है जिका राजस्थानी री बिसरीज्योड़ी प्रतिस्ठा नै फेरूं थरपणै री जी तोड़ कोसीस कर रैया है इणां में श्री श्रीलाल नथमल जी जोसी, श्री मोहनलाल जी पुरोहित, श्री दीनदयाल जी ओझा अर श्री भगवानदत्तजी गोस्वामी आद री सरजणा है जिकी म्हारी गद्य-चेतना रै विकास में मोकळो उकछाव बधावण आळी रैयी है।

आ सगळां रै अलावा अेक और परभाव है जिका री परोख-प्रेरणा हमेसा ईं बात सातर रैयी है कै हूं राजस्थानी में रचनात्मक गद्य री सरजणा करूं। ओ परभाव है बीकानेर रा मानीजता लोक-प्रिय कवि, 'वातायन' रा सम्पादक हरीश जी भादाणी रो अर सादुल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट रा सोध अधिकारी, कवि श्री प्रकाश परिमल रो। डॉ० पुरुषोत्तम लालजी मेनारिया री किरपा रो भी घणो रिनाय हूं।

इयां रै अलावा भी म्हारै साथै ज्यांरो परभाव म्हारै लेखण में रैयो वां सगळां रो भी हिरदै सूं आभार प्रगट करूं।

आखिर में हिन्दी रा प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कवि श्री भवानी शंकर व्यास 'विनोद' श्री ओंकार पारीक अर प्रकाशक श्री कृष्ण जनसेवी रो भी हिरदै सूं आभारी हूं जिणां रै बहुविधि सैयोग रै बिना म्हारी इण पुस्तक नै इण रूप में प्रकासित हेवणो सम्भव नईं हुय सकतो। अस्तु

—शिवराज छंगाणी

# विगतवार


१. नागजी
२. पत्तो रा रमाण
३. अमल टिडी (अफीमची)
४. झाड़ावर जी
५. पींडी पकड़
६. गुरुजी सा
७ पूरणियो भंगी
८ लालियो सैंसी
९ आंटियो बावो
१०. गरीबदासजी
११. हड़फानाथ
१२. मारजा
१३. चौपनिया
१४. वरफ आळो
१५. कळी आळो

# नागजी

जीवण अेक खण रो सपनो स्यो है। मिनख-मिनख सूं मेळ मुलाकात करै इमरत सिरखा बोल बोलै, हरेक सूं प्रेम-मो'बत राखै वै इण इण सिस्टी माथै बस'र रैय जावै बाकी बो नीं रैवै। इसै सभाव रा मीठा मिसरी ज्यू बोलण आळा, बातं-बात में सगळां नै हुमा'हुमा र लोट-पोट करावण आळा हा नागजी।

चावै दियाळी हुयो चावै होळी, चाव नूंवों परव हुवो चावै तिंवार, नागजी आप आळी सदा सुरंगी पोसाक पैरता। मटमैलो थोड़ो फाट्योड़ो कोट, जिकै रै ऊपर तेमरो चीटो अमियोड़ो, मैली टोपी कमीसो काढ्योड़ी अ'र टांगां ढकण नै रगड़्योड़ो पछियो। कद में ठिगणा हा। घणा काळा ही नईं, घणा गोरा ही नईं, पण गऊभरणै रंग रै घेरै आळा हा।

अद दिनूगै-दिनूगै हाथ मे सूणियो अर बाल्टो लियोड़ा निकळता सो धीरै सो'क "हरि भजन हरि भजन" री आवाज करता घर सूं ले'र गळी ताईं पूगता, इतै में कोई न कोई थानै मिल ही जावतो, अ'र पैल बोन इसारी बोली री नकल करतो ......हरि भजन हरि भजन कैवतो अ'र मसकरी भरयो चुटकलो कैय'र आवतो परो।

फेर नागजी दो च्यार पांवडा आगै सरकता अर कोई नीं मिळतो तो वै सीधा हारकैरी पानरी दुकान माथै जा पूगता। हारको जिकै रो लाडलो नाव "कूतियो" है, जे इणगी-उणगी काम रै माय अळूझियोड़ो रैवतो तो वी बेळा नागजी पतळी सी, मोटी आवाज में हेलो मारता। हेलो मारनै रो तरीको निराळो हो। वै कैवता मरे— कुतिया ईया-किया-ईया-किया।

मायै री नाव सुणतांई सैं पूछै— वो गाया कियां दूवै नागजी। नागजी माधैरी गाय दूवण री नकल करे अ'र बतावै— पियो-पियो पीपीधिन पियो पियो पीपीधिन। हूं ढोलकी बजावूं— ताकड़ पित्तो ताकड़ धिन ताकड़ धिन। सगळी महली आळा सुण'र खूब हसता अ'र भजन, वाण्यां गावणी सरु करता।

सैर रै मिंदरां में, गळी गुवाड़ में जिठै जिठै भगवान रो जागण हुवतो, नागजी बठै पूग जावता।

सुध विचारां रा भोळै मन रा हरेक री पीड़ पिछाणन आळा हा नागजी।

जवानी री अवस्था मे सोजीनाई करी हुसी पण बळ्ळो बेळा मे सादो पोसाक नैं छोड़ी कोनी।

आं रै दो बैनां है अेकरो नाम दुरगी अर दूजीरो सीआ। टाबर-टीगर खुद रै कोनी भतीजो रै रामजी राजी है।

अर कदै गळी गुवाड़ मे जमो जागण हुवै नागजी रो नाव लोगां रै होटां माथै रैवै।

# पत्ती रा रमार

संसार में सोख ई मजैरी बात होवै। खावण पीवण रो सोख पैरण-ओढ़ण रो सोख और रमण खेलण रो सोख भी निराळो हुवै। कोअी सतरंज खेले, कोअी चौपड़-पासा, पण खेते बावै ने तास रमण रो सोख।

जठै-कठै तास रै खेलारां री फड़ मंड्योड़ी रैवै, उठै खेतोजी त्यार। तास खेलणो आनै राब-रोटी सिरखो लागै।

सूरज उदै सूं लेयनै सूरज अस्त हुवण ताईं पत्ती रै खेल में अै जम्योड़ा रैवै। रात ने खेलण नै बैठता तो भोर अर भोर सूं रात। जे वांनै आ बात पूछी जावै खेता बाबा, मीठो खावणो चोखो लागै क 'तास' रमणो।

वांनै मीठो खावणो डांग सो लागतो अर तास खेलण ने हुळस'र त्यार रैवता।

खेतो जी कद में ठिगणा, मूढ़ो गोळ, आंख्यां फक्की। ललाट माथै च्यार अेक सळ पड्योड़ा रैवता। माथै रै बीचो बीच टाट, पण ललाट रै जीवणे कानी उपर सीक अेक लाल मस्सो हो। केस कड़-काबड़ा। फाट्योड़ो कुरतो अ'र गोडा रै ऊपर तांईं ओछो पछियो दोवटी रो पैरण नै रैवतो। खेतो जी कम बोलिया करता हा।

अै सभाव सूं मसखरा हा। लोग-भाग आंरै साम्है तास खेलण में हाय खाय जावता। अै खेलता-खेलता पसवाड़ो भी कोनी फोरता। घर रो काम अर मालिक रो काम पूरी जिम्मेदारी सूं निभावता। आछा मेनती हा।

विरधावस्था में हाथ में लकड़ी लियोड़ा हौळै-हौळै घेरुलाल जी रै कूवै माथै आवता। संगळिया जिका नित हमेस तास खेलता उणांनै सोवता।

अेक दिन आरै मिनर भागै कैयो- सेंताजी, थांनै सौ बरस पूग्यां पाछै ाग याद करसा। जिण भातरा रमार थोड़ा ई देसोजे। संतोजो मुळकिया र कैयो हू अद मरण लाग मूं उण बेळा म्हारै बेटा पोतां नै बुलाय नै मूं' ब म्हनै सौ बरस पूगणै रै पाछै म्हारी अरथी मे दो तास अवस मेलणा ो काम कर्‌या। पैलड़ी सरग बिसायाँ लनै अर दूजो मसाण्णा मे।

फेरूं थारै जिसो तक रोजीना अेक तास म्हारै लारै कारजां मे देवण ौ परबंध करिया।

हू सरग ताईं तास मेल्तो जाभू। नईं तो ये म्हारै भेळे तास लेलै ं वणा नै रोजीना दीलणो सरु कर देमूं। खेलण बसत सगळां नै हेलो मारमूं।"

आ बात सुण नै उथळो पूछण आळो अर नजीक-बैठ्या भायला हस-हस'र लोट पोट हुवण लागिया। मोकळी बेळा ताईं हसणो रोकियो रयो कोनीं।

सेतोजी वाने फेरूं ताम खेलण रो केवता। सगळां भायला साथै दुपारै मूं सुईं जिण्या ताईं ताम री घणी घलसी रैवती। सेतो जी मस्त फक्कड़ रा। जद घर मूं टाबर-टीगर, रसोई त्यांर है कैवता खेरो वाथी कैवतो, भईसायो जीमो, उथळो देवता की घड़ी ताम रो पड़ समेटीजतो।

मैनो जो ताम रा खासा रमार हा............ ... ... ........ .....

# अमल टिड़ी (अफीमची)

बजी करेब दस अेक रै अनाजे अमल टिड़ी (अमजी बावो) अनज बावरै कोटड़ी सूं निकळ'र टळ-मळ करता लिगा। मयाजी रै मिंदर दरसण नैं जावता तो बीच में साले री होळी माथै हड़मान जी रै मिंदर री फेरी अवस निकाळता।

मिंदर रै दासे माथै या इणगी-उणगी बैठ्यां मिनखां नै आंरो चैरो दीख जावतो तो वै पैली सूं ही नाक भोंव'र ऊं-हूं···ऊं-हूं कैवण लागता। दो मिट बोला-व ला रैवता। थोड़ी सीक देर में कोअी कैतो बास आवै, कोअी कैवतो अकूड़ो वासी। पण अमजी बावो चिड़ता, रीसां बळता भुसळीजता मिन्दर रै थरकण जाय पूगता वारै बैठ्यां मिनख छोरां नै तिनकार देय'र आंनै छेड़ण नै आगै कर देंवता।

खाळियों वासै · खा'ळयो, SSSअरै खाळियो वासै। छोरा छंड़ा लारै सूं छेड़णरी वास्तै आवाजां लगावता क 'जोर सूं अवाज आंवती थूं वासै··· थारी मां वासै···'थारो बाप वासै।'

आ कैयर अमल टिड़ी जी मिन्दर रै मांय पूगता। वठै मोकळी वेळा ताई हड़मान जी रै चरणां में सरणां लियोड़ा बैठ्या रैवता। मिन्दर री फेरी रै पाछै सूं आवाज फेरूं लागती खाळियो पीपे में। विण वेळा इणां रै मूढ़ै सूं बुरा सबद कोनी निकळता। मिन्दर रै बारै आयनै सगळानै परसाद देंवता, अमजी बावा परसाद दो ·· अमजी बावा परसाद दो। आवाजां लागती जद छोटा व ळकियां नै पुचकारी देयनै लाड-कोड सूं हौलै-हौलै परसाद बांटता।

अमजी दावो जात रा पुसकरणा बिरामण जोसी हा । लम्बा कालो रंग, लाम्बसी रो कुरतो अर गाधी टोपी माथे पे । गोडा तई रै कपड़े रो पोतियो । हाथ मे पतळी सीक तरड़ी रासता । गाल गैंट्योड़ा । धोळी-धोळी मूछ्यां और ठूठी दाढ़ी ही । भांग खावण और अमल खावण रो मेसा रो विसन ।

आ री ब्याव हुयो हो, टावर टींगर हुया, पण मगव म राह्या कोनी । सभाव रा मोळा अर फक्कड़ा हा । जद वांने कोई छेड़तो तो अैं उणारी मात थोड़ी उथळ देवता । टावर चिड़ावता अर गाळ अवस निकाळता पण वांरनी आतमा सूं नईं ।

जद कई हुणारी कोई आ केवतो क अमजी, टावर नैं घर हुवे नै मुंडै क्णामो जितारै ही माथे चढ़सी, उण वेळा अमजी बावो केंवता "जिण घर बाळा उण घर नईं देवाळा"

अमजी बावै रै पेटा पाप कोनी हो । अेक दिन 'मन' पानरी दुकान आळै मोरा अ मोर राजा करण री वेळा आंनैं आय'र कैवी है— अमजी भायला भात मने अेक सलनो आयो । म्हूं देख्यो'क थे मरग्या अ'र लोगा थाने अबोळाई मळाई आळै गंदे नाळै में न्हाख दियो । थारी खालड़ नै कीड़ा खावै । नाळै में पड्या सड़ग्या हा । मने दया आयगी । हूं थाने बारे निकाळ'र लायो । पूरो का । सुणी-अण सुणी कर'र दिनूंगे सूं नाळ्यां निकाळण लागिया । मन बीच-बीच में उणारी गाळ्यां सुणी अ'र माव मारे बारे खांगली र राज री कोसीस करै पण अैं दूणा चौगणा टिड़-टिड़ करै ।

टिड़-टिड़ करता अमय डिही जी चुपचाप हुंवता क' वांनै राजी करण सारु मन कारु पण मनड़ो अनील मागण हुवक'र गेड़ आवतो जद मोरो हुणो सात हुवतो । वारां हिरदो मोम ज्यूं पिघळ आवतो । पछतावो करती-करती मन री कोसी मालीजा देवता ।

अमजी बावो भगवान रा पक्का भगत हा । नित नेम निभायां बिना रोटी कोनी खावता । जिण ताईं आंख्यां री जोत रैई उण ताईं लिछमीनाथजी रै मिन्दर, सान्ती माता अ'र गुरनानक जी रा दरसण करनै जावता अर पाछा हाथ में दही रो कटोरो लियोड़ा आवता. फेर रोटी-बाटी खावता । अै पूं'नरा नीगा हा ।

दुपारै रा दो बजी भांग पीवता । कुनीनै रा चावल अर अफीम रो नुकतो लेवता । जे कदास अमल नीं मिलतो तो आगो दिन उबास्यां लेवता । ईं कारण आंनै अमलटिड्डी कैवता । अमल लेवती वेळा कोई आनै देख लेवतो अै लोकां नै आ कैय'र टाळ देवता 'क' जीवां जिरो जजाळ रैवै ।

आज जद दुकानां माथै मसाणी या नसा बाजां री वातां छिड़ै उण वेळा अमजी बावै रो नांव लोकां रै कंठां में अटक्योड़ो रैवै ।

# झाड़ाघर जी

सौदेबाजी दुनिया में खूब चालगो । जाणै मकल उवारी गिलगी होवै । लोग-भाग उल्लू सीधो कर'र घर भरणै मे हुसियार होयग्या । न्याय-कुन्याव कुण देखै । आपरो खोटो ईंठ से खोटा मनै । भोळा-भाळा धा'र सीधा मिनखा रो जमानो लदग्यो ।

कमी आ कैवै क ओ पेट पापी है। मेट रै कारणैई ऊंधा-सूधा मै करीजै । पण आ बात मानीजे अर ना मानीजै । कोई ओर धींगाणै थोड़ै ई मनमाणी होवै ।

जमानो फैसन रो अर अूल फैल खरचो करण रो भी होवै । कमाई थोड़ी अर खरच ज्यादा । आवै कठै सूं ? लोगा री नीयता बदलीज जावै ।

छोटे सूं लगायर मोटे तांई सै आप-आप रो धंधो चालबाजी अ'र उलट-पलट सूं ही चलावै । काई डागधर अर काई वकील । इंजीनियर होवो चावै ठेकेदार । बळपड़ता जाळी-फरोसः मे राग छोटै ।

जितो काम-काज आजकल दलाली सूं चालै उतो न्यारो थैलूंपा रै सू थोड़ै ई चालै । कमीसण रै कारण दलाल लोग झट सूं मुरगा पकड़'र लावै ईज ।

पण झाड़ाघर जी आप री मन्नी रा अलग ईज है । चालाकी आंरै रग-रग मे भर्योड़ी है । जिको सेठ-साऊकार या भलमाणस आंरो पंजा मे फस जावै फेरूं बेगो छूटै नई ।

झाड़ाघर जी रै दलाल सुभावी । अेक दो ई नई च्यार-च्यार पाच-पोच । कूदरयो फरयो सफेद ई री जान चोख्ता धारयोड़ी, गाळगा नै

अमजी बाबो भगवान रा पक्का भगत हा । नित नेम निभायां बिना रोटी कोनी खावता । जितै ताईं आंख्यां री जोत रैई उतै ताईं निछमीनाथजी रै मिन्दर, शान्ती माता अ'र मुरनायक जी रा दरसण करनै जावता अर पाछा हाथ में दही रो कटोरो लियोड़ा आवता, फेर रोटी-बाटी खावता । अै चूंचरा चोखा हा ।

दुपारै रा दो बजी भांग पीवता । कुचीलै रा चावल अर अफीम रो नुकरो लेवता । जे कदास अमल नीं मिलतो तो आखो दिन उवास्यां लेवता । ईं कारण आंनै अमलटिड़ी कैवता । अमल लेवती वेळा कोई आनै देख लेवतो अै लोकां नै आ कैय'र टाळ देवता 'क' जीवां जिती जंजाळ रैवै ।

आज जद दुकानां माथै मसखरी या नसा बाजां री बातां छिड़ै उण वेळा अमजी बाबै रो नांव लोकां रै कंठां में अटक्योड़ो रैवै ।

## झाड़ाघर जी

सौदेबाजी दुनिया में खूब चालगी। आणी अक्कल उधारी गिरवी होगी। लोग-भाग उल्लू सीधो कर'र घर भरणे में हुशियार होयग्या। न्याव-कुन्याव कुण देखे। आपरी रोटी हेठै ई सीरा मेलै। भोळा-भाळा म'र सीधा मिनखा रो जमानो लदग्यो।

कभी आ कैवे क ओ पेट पापी है। पेट रे कारणैई ऊंधा-सूधा सै करीजै। पण आ बात मानोजै अर ना मानोजै। कोई और धींगाणै थोड़े ई मनवाणी होवै।

जमानो फैसन रो अर थूळ फैन सरखो करण रो भी दीवै। कमाओ थोड़ी अर खरच ज्यादा। आवै कठै सूं? लोगा री नीयत बदनीज जावै।

छोटे मूं लगायर मोटे साईं सै आप-आप रो धंधो चाल्बाजी अ'र उलट-पलट सूं ही चलावै। काई डागधर अर काई वकील। इंजीनियर होवो भावै ठेकेदार। बळपटना आळी-करामात सै रास्त छोडे।

जितो कामकाज आजकल दलाली सूं चालै उत्तो न्याली वैदुगा र सू थोड़े ई चालै। कमीसण रे कारण दलाल लोग झट सू मुरगा पकड़'र लावै है।

पण झाड़ाघर जी आप री मस्ती रा अलग ईज है। चालाकी आरै रग-रग में भर्योड़ी है। जिको मेठसाऊकार या मन्नाथन आरी पजाळी में फस जावै फेर वेगो छूटै नई।

झाड़ाघर जी रै दलाल लुगायां अेक दो ई नई च्यार-च्यार पाच-पाच। फूटरया फर्‌या सफेद दई री आन मोल्या धार्‌योड़ी, गाळका नै

थोड़े दिन मूं भाड़ाघर [illegible] आकड़ा ।

[illegible] दूनियादारी [illegible] आ रै [illegible] आसी [illegible] [illegible]

भाड़ाघर मा'राज [illegible] नै जासी ।

भाड़ाघर मा'राज ठाट मूं [illegible] [illegible] पीळो अर लाल ई धोती [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छोड़िस्योड़ा आगरै घरै बैठ [illegible] ।

आ रै कमरै मे भगवती अ'र भेरू री तसवीरां लाग्योड़ी. नजीक अेक दो आदमी री खोपड़्यां, ज्यारै माथै तेल सिन्दूर लाग्योड़ा अ'र माळीपानां चढायोड़ा होसी । म्हैं तलवार भी गाडी ।

भाड़ाघर जी रै आगै जोत जळती रैसी । भगत भजन-वाण्यां गावता रैसी । भाड़ाघर जी गुद परखी देसी । आपरी जाण में सै हाव-भाव देवता घट में आवै जिसाई करसी ।

जिका-जिका नूंवा आदमी आसी वै बडा ध्यान सूं मा'राज री बातां सुणसी ।

अेकार री अेक भगत आयो अर मा'राज नै बड़ै दुःखी अर गळ-गळ होयर पूछ्यो– भाड़ाघरजी मारा'ज म्हारै खेत सूं ऊंट कोण ई चोर लियो अबै आप कांई अुपाव बताओ नीं ?

मा'राज उथळो दियो– अरे भोळा भगत ! थारै मनरी बात हूं जाणग्यो । थारी चिन्ता मेटणहार भगवान है । तीन दिन रै मांय मांय थारो ऊंट पाछो आयो रैसी ।

भगत कैयो– घणो हुकम प्रभू । हूं आपरै गुण नै जलम भर कोनी भूलूं ।

थोड़ी देर रै आंतरै सूं फेरुं मा'राज भगत नै बुलायो अ'र कैयो– भगत ! हूं कैवूं जिको सुण । चार सेर मोठ, तीन सेर बाजरी, दो सेर गावो घी, अ'र खांड एक आध बोरी जल्दी भेजवा । थारो संकट भगवान मेटसी ।

भगत बीं वगत लूंजे मांसूं पैसा देयर समान रो परबंध करवायो ।

भाग जोग सूं ऊंठ हाफंई धीरे-धीरे पूरै आयग्यो। बीं दिन सूं आप परसिध होवण रै पगोथियां माथै चढिया।

अेक-अेक कर'र सो अिग्यारह होगो। जिकै दिन सूं झाडाधर जी मारा'ज रा धनन मिलण लागिया, बीं दिन सूं ढोळै-ढोळै आदमी आवणा सरू होया।

चोर, जुआरी, सट्टेबाज अर नसैबाज सगळै ई आरी हाजरी पं ऊभा रा ऊभा रैवै।

मारा'ज जिकै दरग्यान में आपरो अखाड़ो जमायोड़ो है बी जगै अेक अलमारी भी है।

अलमारी में धूप अर होम करण रो समान मेल्योड़ो राखै। सराब री बोतल अर महीं'न-महीं'न पीस्योड़ी काळी मिरचां री सीसी भर्योड़ी भी।

सीवनै पाट री बऊ हमेस अणमणी रैवै। छोरी सायण स्याणी अर चतुर भी। रूप रंग रो फूटरो, नाक नाक री मुरैक लागणी। ओळ सुधारणी।

सीवलै नै निज री चिन्ता रैवै। दो-च्यार भायला रै मुंडै झाडाधर जी री परसंसा रा पोथा बांचीजता सुण'र बीं आपरी बऊ री लेआवण री सोची।

जिकै दिन बीं लेआवण सारू उण दिन मोकळी भीड़ मचगी। सीवलै री बऊ भी मन में सोच्यो क' आ काई बात है ? अे लोग म्हारै सांनी क्यू देखै ? अेक तो डील सुत्त अर दूसरी आ लोगां री भीड़। बिचारी बेन ब्याया अठे-फठे हुयगी।

चरित्र री चोखी होवण रै कारण लाज सूं घूघटो निराळ्यो। पण भायला अ'र सीवलो झाडाधर जी रै अठै पूगग्या।

मारा'ज नै आपरै आमण माथै जम्योड़ा देख'र सीवलो कैयो–मारा'ज म्हारो भी संकट मेटो। हूं घोळ दुखी। म्हारै घर में लुगायी अणमणी। आप झाड़ो लगावो अ'र निरखो बी क' ईं नै काजी रोग है ?

रात पड़्यां पाछै झाड़ाधर जी घर सूं बारै कोनी निकळै। थोड़ै में पड़ई सूं ई बारो वाळजो कांपणो सरू होय जावै। बारै तो कुत्ता अर बिल्ली होवै। ढेकली री तो बारै वेड़ो नै बरदास है।

सेठ पूछई एक दिन रात रा बारै बजी बळी दरावंण री झाड़ाधर जी नै कैयो। झाड़ाधर जी हुंकारो भर लियो। आ बात झाड़ाधर जी री लुगाई नै सेठ आळी अर बारै विरोध करण आळी सुण ली। थी नै भी मोटो लाधग्यो।

ममसाण-भोम में रात रा बारै बजी जकै दिन झाड़ाधर जी अर सेठ जी पूगै, बीं दिन बांरो पाछो तीसरो आळो दूजो आदमी भी बठै पूग जावै। बिण पैली सूं चोटी ताईं काळा कपड़ा पैर लिया। सोच्यो क' जद बदै झाड़ाधर जी बळी-बाकळा लावर हैलो मारसी, हूं भाग'र पूग जासूं अर देखसूं किण पुरसा री सिधायी।

झाड़ाधर जी ममसाण भोम में दिखणै सूं जोत जळाय'र रमणुक्को धमगाट चढ़ाया। अेकै कानी बळी-बाकळा फेंक्या। अर दूजी कानी मूंडै सूं जोर-जोर सूं अथाग्रो लगायी आव... आव... आव।

अवाज सुणतां पाण ई मसाणिया कुत्ता दौड़ता आया। झाड़ाधर जी रै टाबा में थोड़ो सहको आगै पीठ कानी मुडोग्यो। बा घूम'र देख्यो तो अेक काळी छाया साम्ही दीखै। झाड़ाधर जी रै पगां री हवा उडण लागी। बा काळी छाया धीरे-धीरे नजीक आवण लागी क' झाड़ाधर बांदी री पाली धमाद आळी, बळी-बाकळा रो ठाव छोड़'र बेकर पड़ी दड़बड़-दड़बड दौड़्या। सेठ भी डरतो दौड़्यो। बठी नै काळा कपड़ा पैर्योड़ै आदमी गणडा बावन भारा मेळा कर'र परसाद खाय'र आपरै घरै बहीर हुयो।

दिनूगै घर आळा देख्यो तो झाड़ाधर जी नै बुखार एक सौ च्यार दियो। पूछ-ताछ नै आवण आळा भायला अर भलै पूछ्यो क' बठै ई घर में कोनी मान्यो झाड़ाधर ...आगत बात बताय दीनी।

झाड़ाधर जी इण ... तिरै दिन काळा कपड़ा आळै

घर रै भाड़ाभर जी रै गुरुजन आयो, वौ दिन सगळी बात खोल'र बी बताई । भाड़ाभर जी रै बाबा री निजरां गुजरी । बौ ठोकै ठोकै ठीक तौल लागियो । कोरा कायर अर डरपोक है भाड़ाभर जी तो । लुगायां री साथ रुखाळणो री भोळो ढंग आंट बण्योड़ो है ।

पछै महाजिनां रै भाड़ाभर जी आगल-पीछल भी बताई । दस जणां नै दस आसर । कैरो न कैगो तो मिलै ई ज । थारो पेट पुरती तो होवै ।

भाड़ाभर जी घणा पढ्योड़ा कोनी । बिच्छू रो भाड़ो जद कैरै ई मौको पड़ जावै, वौ बेळा जिको मंतर बोलै वो आप लोगां नै बतावूं ।

आगी रोटी ऊपर साग ।
उतर बिच्छू रहो लाग ।

आप रै पेट खातर कई तरै रा सांग रचै । घर सूं बा'र निकळै जद गुलाब री छांट छिड़कयोड़ा, लाल कपड़ा पैर्योड़ा अ'र जटा बधायोड़ा जिसा दीखै सागे'ई जाणे त्यागी तपसी होसी ।

# पौंडी पक्कड़

आखी दुनिया रो ढाळो बदळ गयो। नीयत में दिन-रात रो फरक हुयग्यो। कुण जाणे कळजुग रो परभाव है या लोगां रो आपो मा'लीजग्यो। हूं कोरो उपदेस कोनी झाड़णो चावूं, पण आंख्यां देखी अ'र बीतमा में बीत्योड़ी बात बताबूं।

टैरिलीन रो बुसकोट अ'र पैन्ट पगां में बाटा कंपनी रा जूता, पगा में कीमती मोजा पैर्योड़ा, धिमा दीखै जाणै कोई रईस रा बच्चा होसी। सरीर रो घड़ावट तो पैलवान दारासिंह ज्यूं, आंख्यां मारणै भैंसे री तरै। मूं डो ज्यां टाबा दियोड़ी थाळी बरणो अ'र केस काळा भंवर। नौकरी सूं म्हाय'र दूजो काज करै इणगी-बिणगी लुडिया न्योतरण रो। अंगरेजी में ई री म्यानो है रोड अंगपैंकटरी करणो।

पण गायला आमू निअर बचाय र मागणी री कोसीस में रैवै। आप पक्का पौंडी पक्कड़ है। जिकै नै पौंडी पकड़ीजगी फेर आखै सडपारी लागी हुवै। थारां डिस्टी अ'र छनिछर री द्रिस्टी में कोई फरक कोनी। दूजा रो गरणो कगवणो अ'र निज रो मिट्ठो सैकण में अेक नम्बर हुसियार। आप वास्या रा वालमा है। दो च्यार भायला जे कठैई आपस में बात्या करता होसी तो अे जाय'र आप आळो खुरपो अवस चलासी। जाणै खीर में मूसळचंद हुवै। ऊंधा-सूंधा घेमळा मारता रैसी।

भूकने पामणे रा तो हमेसा मीन रैवे। चुनाव रै दिनां में आरो पूछ रैवै ई अ। गुड बिना चौथ को [illegible] ूं आ रै बिना राजनीति रै सिम्पारा रौदाळ कोनी गळै। [illegible] ने रा तो मालिक अपने-आपनै

[illegible] । [illegible] पछै [illegible] आंनी भी [illegible]
रैवै । [illegible] आगै [illegible] ।

आप [illegible] भी है । आपरै [illegible] [illegible] [illegible] कोनी [illegible] । [illegible] जावै । [illegible] ज्यूं [illegible] रैवै [illegible] माथै [illegible] रैवै । [illegible] आ जावै क' [illegible] होटल में आवै । [illegible] तो [illegible] सूरज [illegible] रैवै ।

चाय पीवण री तो [illegible] । खाणे-पीणै रै बारे में पूरा औघड़ । लस्सी, शिकंजी, [illegible] अ'र दूध मिल जावै, चावै [illegible] अर ठंडो आगे दिन मिलतो रैवै, आंनै सायलो कोठै में [illegible] गुणगान ई करै । आंरो ध्यान हमेसा औ रैवै क' पगायो अन्न मिलणो [illegible] दुर्लभ है शरीर तो बार-बार जनम लेंवतां ई रैवै । संस्कृत में इयो रो मतळब है "परान्नं दुर्लभम् लोके शरीराणि न पुनः पुनः ।"

अेक विसेसता ओर है । आपरो बैठण रो स्थान ठीक अेंगी जगै है जठै सूं मेळ मुळाकात आळा हमेसा निसरै ई ।

बीकानेर में घणी चहल-पहल री जगा तो कोट गेट ही है, दूजो नईं । आंरो (पींडी धक्कड़ रो) ग्रासण कॉफी-होटल रै सामी पान री दुकान माथै लाग्योड़ा रैवै ।

समाजवादी पार्टी आळा हुवो चावे कांगरैसी आं री ड्रिस्टी में दोनों समान है । जिकै सूं आनै फायदो हुवै वीं रा गुणगान गावण में चारण अ'र भाटां सूं कम कोनी रैवैं ।

अे धरम रै काम में भी सोटा-लगोटा कस्योड़ा त्यार रैवै । भजन-कीर्तन में करताळ छमछमा लैयने सगळां सूं आगै रैवै । जे कदास चंदो करण रो काम पड़ै तो औरो ध्यान थोड़ो बोत आपरै माथै लगावण रो भी हुय जावै ।

जे कदास कोई आंनै बीच में टोक भी देवै तो आप सळ सटै भैंस मारण रो भी काम करण नै हाजिर रैवै । गाळी-गळोच तो आंरी भासा रा गैणा

है। जे कैनूं ई जिद बाद हुय जावै तो दो च्यार बरसोंडी अमरेजी गाळ्यौ शाइण में भी खूब कोनी करै।

पण जठै सेठण रा डेरा हाल्योड़ा है उठै हुदैई कोनी। अेक भायलो ई जे घाय पावण नै ले आवै तो तीन घंटा री गयी। पैलड़ी जद नीठ पीडी छुडाय'र जावण री कोसीस करै इतै में दूजो दीख पड़ै। बारै सागी भी त्यार। दूजोड़ै भायलो री भी पींडी काटी। पकड भोर्मा अ'र बीरी परसया कर'र सै'र भर री ऊट-पटांग बात्यां रा गुलछर्रा छोड़ता रैसी। लाज-सरम तो आ मूं गरम कर'र डेरा कूं च करगी। लालाराम जी वैद बिना लगाव री पुड़िया कुण देवै।

"मीरो माणी दांत घिसै तो घिसवादे
मतलब सरै लोक हंसे तो हसवादे।"

आ कैवत मीरमोड़ाई पीढ़ी पतकड़ जी है।

भोर में छः बजी मूं लेन'र दस बजी ताई अ'र सिंझ्या साढे पांच मूं रात रा बारै या अेक ताई लोग-भागा री पींडी पकडना रैसी। होळे-होळै भा रो मंडली रा सदस्य घटता ई जावै। भारा-पट्टी अ'र हत्ती-तत्ती रै मिवा और बात सा गोण रैवै। फूटरा फरी. ओपना दीसै, पण लोगा री, भायलां री अ'र नेतावा री दिस्टी में किसा'क है, कोनी कै सकूं, साहित कारां री दिस्टी मे थे आपरो चिनाम अजूणो हो राखै।

# गुरुजी सा

गुरुजी सा [illegible] —…हां ? शायद गुरु गे नीवाणे रा मांयला गिनत ओळखता हा । ई रो नांव [illegible] गुरु [illegible] । [illegible] बारैगुवाड़ रो । बापरो नांव घोसिया मारा'ज । अेक मोटो भाओ काळिजो अ'र दूजो किसनीयो । दोनां भी ई रै [illegible] हाल नाई जीवै । गुरु बाळपणे में आपरै घर में सगळा भायां सूं चोखो हुसियार अ'र समझदार गिणीजतो । गुरु रा बाप घोसिया मारा'ज फरसोळाई तळाई माथे मिंदर रा पुजारी हा । ई कारण बठैइज रैवता । आं रै परिवार री गुजरो विरत वाड़ी माथे चालतो । बारागुवाड़ रै बीचो बीच जवरेसर मादेव रो मिंदर विराजे, उण री पूजा करण आळा गुरु रै ई घर रा है । ज्यां तो गुरुसा खुद पाठ-पूजा विरत-वाड़ी रो काम-काज आपो कर लैवता । मंतर इण रै होठां माथे रैवता । सप्तसती, रुद्री, गीता अ'र तीनूं काळ री सिंध्या आ रै मूं जवानी याद ही । जद-कदै विरत-वाड़ी में जजमांनां अठै जांवता आं सूं सो राजी हा । सो हुळस-हुळस'र आं सनै कथावां सुणता । आं रै गाभा भी चोखा पैरण रो घणो कोड हो । सरीर में ठाढ़ा जवान दीखता । आं रो कद पांच सवा पांच फुट रो हो । रंग गऊंभरणो । केस माथै रा थोड़ा भूरा सी रैवता, बाकी दाढ़ी मूंछ्यां भूरी अ'र छोटी छोटी रैवती । केस भूरा दीखणे रो कारण तेल नईं चुपड़ नै रो हो । लुखासी आं रै चैरै ऊपर दीखती । असो गुरुसा रो सभाव ही हो । वड़ा-छोटा आपरी गळी रा हुवो चावै पर गळी रा सगळां नै वड़ी बोली सूं बतळावता । भाइसा, काकासा कैयै बिना कैनै ईज उथळो कोनी देवता । बिरध लुगायां नै मां सा

अर भारयू टोरी छोरूयां नै देव ना बैठ'र पुरुषना बोलणा । घर री काम राज करण री सागी जुम्मेदारी इणां री ही । ई कारण सूं गां री मानता है आदमी करता । गढी रै कोटा सूं गुग री उमेद आटो हो । अनू गुए जिका चीज पुगांवै बोटनी, जिका इस रै जिका नैं जी मैं दाऊ चड़ी बावी ।

जद गुरुवा रै सारै इन्द तणै री परगंता रा दिन मोळा बारण हो गेया । बस्ती नै देर लागै, किस्ती नै देर लागै कोनी । गुरुजी अ'र मन्दर जिका रोड़ी नै दिन रात उदास करै वाने भी नीं राहु लागै । जिका बण'र गैर जावै । हर् माणसां जिका बोड़ सबरी आछा हा पण ऊँभदार री दसा उण री भी मारी । बाती वही अंग लागां वाळी मोलमी वेळा ।

गुरुवां री चोखी दसा फिरगी । रोजी नै अगा बावा लागै भाग घोट'र पीवण री धारणा पड़गी । वणै-वणै तो भाव होवा अ'र धतूरा रङ्ग्योड़ी भांग पुरगी । कणैई मवरामां जिकै मं मतियो भेळ्योड़ी ।

मनै बाबा री मढ़गी मे गुरुवा चोखा निजवाड़ जिणीजता । बदे सांझ भांग पीवण नै मई जिमती तो वे सीधा सरवाट बनजी बावै री कोटड़ी पुगता । बनजी बावै पणी मीठ मनुहार करै ई पीवाती । बनजी बाबो पजळनी मिनख हा । वांरी कोटड़ी मे मनै बाजा गे जुट मच्योड़ो ही रैवतो । मैरा-गैरा नत्थू गैरा नै कोटड़ी मे बड़ने री ओसर कोनी हो । सेठ साहूकार भी वर्ठ भांग पीवण नै आवता । बारे पहर भांग घुट्योड़ी रैवती । आयै नै हाथ री मनुहार मिळती । गरीब गुरुवा नै सवै-सवै मांगे मांगने पईसा भी मिल जावता । इसो हो बनजी बावै रो सभाव ।

जद वै गुरुवा नै आतै सूं आवतै देखता तो विसरी पांऊ् पोड़ी बोली में गुरुवा नै हेलो मारता—गुरुवा हाऊंहा । गुरुवा कैवता—हा बावासा हां-हां आज तो भांग पाईजै । बनजी बावो घणै हरख कोड सूं उणां नै भांग (बूंटी) छाण'र पावता । गुरुवा जद भांग पीय'र अरदो जमावता, फेर पाछा रमता-राम हुय जावता । गळी मे मिलण आळा सोग गुरुवा सनै जाय'र गीत सुणावण रो कैवता । वांनै बतलावण री मस आ ही……… ।

[illegible] रो, [illegible] आ[illegible] ।"

[illegible] गुरुसा [illegible] आसीमा[illegible] । [illegible] सूं गावतो ।

"[illegible] जिम्मा ;

[illegible] री [illegible] ।

[illegible] जिम्मा ।

[illegible] मायड़ [illegible],

[illegible] जिम्मा ।"

गुरुसा [illegible] पूरो [illegible] ।

गुरुसा नाईं जिम्मे रै अठै जद गो पूरै [illegible] में हो । खूब मौज मनायी । नाईं जिम्मै रा [illegible] पाणी री तांई बैवता । घणो मीठो हो । [illegible] रै वारै [illegible] घुमता ज्यूं [illegible] रै वारै मालयां भणां । गुरुसा प्रेम रा भूखा हा जद गई आ [illegible] काम करणो हुतो तो गुरुसा नकारो करता कोनी । नगै बाज बजार सूं आं नागै सू भांग मगवाता । अेक साइकल दराय देवता जल्दी मुड़'र आवण रै वास्तै । जद अै साइकल माथै सवार होवता वीं वेळा इणगी उणगी अर आमै-सामै चारूं कानी निजर दौड़ावता । गाडी पूरै वेग सूं चलावता । भांग रै ठेकेदार सूं आछै तरीकै सूं भाईसा कायोसा कैवता बात करता । ईंयो तो ठेकेदार आंनै आछीतर जाणतो । आं रै सभाव नै ओळखतो हो । पण आंरा मीठा-गुटका सुणनै आं नै भांग दो मिन्ट देर सूं देवता ।

पैली आं रै मूंडै सूं दो च्यार अेक गीत सुणता जद गुरुजीसा गीत सुणांवता-सुणांवता वात याद करता तो आं नै आपरै काम रो पूरो ध्यान आय जांवतो । ठेकेदार सूं खथावळ कर'र भांग मांग'र इणगी-उणगी देखता सीधा वीं-जगै ईं भांत पुगता ज्यूं पंखेरु सिझ्या पड़ी आप-आपरै आळणै में पूगै ।

गुरुसा नै क्रोध आवतो जणै कैरै ई साऊ रैवता कोनी । आ वात सांची है कै क्रोध चंडाळ हुवै । अेक दिन ओझिया माराज गुरुसा नै घणो

तग हरियो। जद गुरुसा ओभिया माराज सूं भिड़ग्या।

ढोल-डांग रा ओभियां माराज पूरा है। गुरुसा हाथा-पाई करनै थकग्या। आ सूं पोच नी आया जणै दौड़'र मिदर जिकै में आप रैवता हा। बड़ग्या। ऊपर सूं भाटो वगायो। ओभिया माराज थोड़ा सीक बचिया। नई तो भोभर खोल देवता। जद ओभिया माराज गुरुसा नैं पकड़ण नैं मिदर रै डागळै चढ़ण लाग्या इत्ते में तो गुरुसा ऊपर सूं कूद'र नैनीवास भनाया।

आगी निरस्न भोळी ही। दिन ढळियै घूम'र पाछा आया जणै ओभिया माराज सूं गोम्रीना. वीनै ज्यूं थोलण लागग्या। अरे पेटा पाप तो कोनी हो। वईं बंमूं ईं लड़ना झगड़ना कोनी। थोली रा ओछा बोरा कदे रैया कोनी।

जीमण-जूठण री चिन्ता, उठण बैठण री चिन्ता रत्ती भर कोनी। जीमण गे न्योतो सूरज वाग रो हो। जठै-कठै गळी गुवाड़्यां में जीमण हुवतो गुरुसा उठै त्यार। इण सैर रा घणं मरा लोग थानैं जाणता हा। मनाशी री बात ही कोनी।

गुरु सा नित नेम रा पक्का हा। बिना स्नान रोटी कोनी खावता। तिनूंगै उठ'र निमट-निमटाय'र दातण कुरला कर'र पीतळ री 'घड़' नळ सूं भर'र ल्यावता। फेर आभा समेत स्नान करता। गाभा पैरिया पाछै न्हीलणा कोनी। बिरत-वाड़ी रो टको-पईसो, सोनो-चांदी सगळा आपरी धोती री गांठ मैं बांध्योड़ा राखता। ईं बात री बानै कोरोई विसवास आवतो कोनी। भेक दिन सूरदासाणी प्रोहितां री बगेची में आ रा गै पईसा खोल'र आगी मा मा नै देदिया। गुरुसा नै आ बात पसन्द लागी कोयनी। दौड़'र पुलिस में रपोट लिखायदी। थाणेदार नै आय'र कैयो कै "माईमा मगना सा नै मुझे लूंट लिया। सोने चांदी री नदी वैवायदी" आप भाइमा हाजो, नईं तो मिनख मर रया हैगा। थाणेदार इलकदारी करी पण वात में सार कोनी हो।

इण रगत आळा हा गुरुसा। मोटै-मोटे, छोटियै री प्याऊ, टिगाळ

भींत मा मनोज्ञाक नजार माथै आंग जीवन नै चूमता रैवता । आं री औ अनुभूतियां हो भी मालमी । आये लिगे मैं लोगां री धारणा है कै गुरुजी री अनेक गुणां सूं मढ़ीज हो, उण रै कारण ही अिसा सीधा-सीला जीवन गाळग्या । पै आ फैली क आखामा कुलफिया माराज रै परलोक सिधारण रै बाद गुरुजी रो मिश भरमीजग्यो । पण अै सै बातां होयनै भी गुरुजी सगळां सूं प्रेम करता ।

गुरुजी सरगलोक सिधारग्या, पण वै धरती माथै आपरो ऊंचो जस छोड़ग्या । लोग-लुगायां, टाबरां आपा मैं रै होठां माथै गुरुजी रो नाम हाल तांई मांयै । गुरुजी ऽ ऽ ... । उथळो मिलतो हां-सा ऽ ऽ...हां... " भाभीसा ऽ ऽ मां सा ।

# पूरणियो भंगी

"रोटी ल्यावो अन्नदाता ! खूब फळो फूलो, भगवान थांने रिजक देवै, मोकळो पैदा देवै, म्हारो भी पेट गुजारो थारै भाग सारै चालतो रैवै, दाता मुख सूं मिवै" आ वाणी बोलतो रोजीनै, रो घर रै सनै खड़ो हुय'र पूरणियो भंगी।

बोली इसो मीठो बोलतो जाणै मिसरी घोळियोड़ी हुवै। सड़क साफ करणिया घणाई भंगी होसी, मैंतरी भी, पण पूरणियै जिसा गुणी मिनख लाधा ई लाधसी।

ठीक साडी च्यार बजी भाभरकै रो सूतो उठ'र लिगटी आळी, सड़क झाड़ू'र सड़क आळो नै मीठी रागिणी रै साथै नींद सूं जगावतो। इसी आळा री भली थी नै गळ्या री टिम्टी सूं देवतो। गै सूरज महाराज पाव लाठू ऊंचा चढ़ आवता। मालीम रो मोळो मरम में भी पूरणीओ इसी बोली राखतो।

घर सूं बारै निकळतो जद माथै समसम गो फटेड़ फेंटो पैरतो, घोटो पगड़ बोळो अ'र लारी री बोटी धोती, जूता भी सूखा अबोट। मूंडो चरमें फटो अ'र सूखड़ा पड़ जावती, मोटी जाणै सूतो बीतियो हुवै। दाना रै बोलरो मावड़ूया अ'र चाटी रो भरणियो, गर्दै में चाटी गो होतो।

झाड़ू हाथां में हमेसा राखतो। चाहै सूखो दिन सूखो रहव मूं न हुवै।

दिवै होळयै में झाड़ू देवण री पूरणीयो सूगो बठै पण कोठ-बाण घराई रै मायनै के ले निरखण लिया। बठै सूं ई डावेदार में बोठ्यो

[illegible] देवता। [illegible] ज्यूं [illegible] बिन [illegible]

[illegible]

[illegible] भंगी [illegible] हिवड़ै में दया री [illegible]

[illegible] भंगा री आली [illegible] जद बड़ै [illegible], शराब पीणो छोड़ी। शराब सूं [illegible] अर शरीर दोनां नूं ही [illegible] हुई।

[illegible] भंगी [illegible] बाबा नै मानता ही। आ ही बाणी नै गंगा रै [illegible] पण आदत बिगड़्योड़ा आदम्यां री वास्तै कैवत आ ही बात ही क' "ज्यांका पड़्या सभाव क' जासी जीवनूं।"

पूरणीयो भंगी टाबरां सूं पूरो सनैव राखतो। होळी, दिवाळी माथै रंग अर पटाखा अर आखातीज माथै किन्ना-मंजा टाबरां नै दरावतो हो। बस्ती रो कोई अणजाण बाळक जे आ नै कैय देतो— पूरण बाबा पैसा दो, बिण सागै आपरी टांट मांयनूं आनो-दुआनो निकाळ'र दै देवता।

मेळै-ढ्योळै रो सोख ई पूरणीयै नै कम कोनी हो। सुजानदेसर रै गांव में रामदेवजी रै मेळै अवस जावतो। रामदेवजी रो घणो भगत हो। नारेळ-पतासा उणां रै मिन्दर में लेजाय'र चढावतो ई।

गोगै जी रै मेळै माथै तो कोई न कोई आपरी बस्ती में उच्छ्व करवांवतो ईज। भगति-भावना में चूक कदै कोनी करतो। लगन रो पक्को आदमी हो।

बीकानेर सैर सूं कोडमदेसर भैरू जी रो मिन्दर सोळह मील गै अड़ै-गड़ै है। बळद्या गाडी किरायै गी विण माथै मैला मैला छतरी डांडा अ'र आखो परवार गाडी माथै बैठ्योड़ो ठेठ ताईं सगळा नै दरसण करावण नै लै जावतो। भैरू जी री मूरत माथै तेल,सिन्दूर अ'र माळीपाना चढावर फेर परसाद करतो। आपरै कुटुम्ब-कबीलै रै लोगां नै परसाद बांटतो। आप सगळां सूं पाछै अरोगतो। रात भर भजन बाण्या गवावतो अ'र जागण करतो बीतावतो।

पूरणीयो आदमी खरो मैनती हो। मैनत सूं कमावणो अ'र खावणो ई आपरो फरज समझतो।

गळी-गुवाड़ अ'र सड़क माथै जद भाड़ू लगावतो वी समै अेडो सू लेयनै चोटी ताईं पसीणो डील माथै बैवतो।

पूरणीयो कम बोलबाळू अ'र मिजाज सूं सान्तियो हो। हाथ वाळ'र होम कोनी करतो अ'र किसो उपदेस देवतो। चाय-पान रो गरचो कोनी करतो। सुख री दाळ रोटी सू ई संतोष मानतो।

बिरादरी वाळा दोगो बगत मे नाम लिरळाराम नै पूरण मारा'ज मनै पूछता अर कैवता 'माराज, छोरो बीमार है रगिया गो गरण जरूर है। किरायो नो आपरा गुण जनम भर कोनी भूलू।"

पूरण मारा'ज जवाब देवता 'देख बेटा, ई बात गो इतरो सोच मत करे, ई अबार म्हारै हेटा दवै सू रगिया दिराय देसूं। थारा पूरण गो बेगो कोसीस करूं।" पूरणीयो दुख सुख रो साथी हो।

ब्याव-सगाई, बीमारी-ओमारी माथै पूरणीयो बिरादरी वाळा रै बोत काम आवतो। हजारो रुपियां गो जमानत देवण मे भाई मे कट कोनी लावतो। रुपिया नै मिनख रै हाथ गो मैल समझतो।

जाति मे सरपंच होवण रै कारण [illegible] [illegible] री [illegible] निपटावतो। न्याय करती बगत बडै बेटो नो दूध रो दूध अर पाणी रो पाणी करतो। किण री तरफदारी कोनी लैवतो। ओ बात बाळा रै बोत [illegible] [illegible]

दो मिनट । मैगसी मुलाकात सूं पैली आ बात तो कैवणी ठीक क' म्हारा वांनै मानतो अर मीठा बोलै लोग ।

पूरणीयै रै मार्ग में भागता हमेसा रैवता । आंरो नाम गोंकळियो अ'र बिच्छूड़ो ।

गोंकळियां गो डील-डाळो अ'र बिच्छूड़ो फरक आळो । बिच्छूड़ै री पूंछड़ी बिच्छू रै डंक ज्यूं ही ।

बजार सोदो खरीदण नै जावता जद सी मार्ग । पूरणीयो घणी भीड़ मैं देख'र आगां सेठी चालतो "भरको बाबूजी, बावण दो सेठ सा'ब अठगा होयां भार्या, मैतर नै रस्तो देवो ।"

जद भीड़ में ऊभा मैं लोग छेड़ै हट जावता अ'र इणनै रस्तो देवता ।

दुकानदारां सूं चीज वस्त खरीदतो जणै बोलतो– सेठां दाणांमैथी, हळदी, धाणां रो कांई भाव ?

दुकानदार जद बातां में लाग्योड़ो रैवतो वीं वखत फेर मीठी अवाज में कैवतो "सुणो घण्यां म्हारी अरज ! थांरो भाग वधै, भगवान थांनै मोकळी पैदा देवै, थांरी कलम सवाई रावै ।

दुकानदार सौदो भट सूं देयर रुपिया लेलेवतो । सिंझ्या सवेरै गळी रै कुत्तां नै रोटी नांखतो । ईं अबोल जीवां रै खातर पाणी री कूंडी भी घर आगै राखतो ।

अेकर आप सड़क रै काम काज सूं निस्चंत होय'र घरै जावण लाग्यो, विण समै अेक भैंसे आळो मैंतर भैंसे नै रवड़ रै हंटर सूं घणो दोरो मारतो हो । पूरणीयै वीं नै देख लियो । बस, फेर क्या हो । क्रोध सूं मूंडो तांबड़ै भरणो हुयग्यो । वीं भंगी नै अैसी गाळ्यां काढ़ी– साळा हरामजादा थांनै ईंयां मार पड़ै जद किसै भाव रा विको । थां नै मरणो कोनी । क्यूं आं जीवां री दुरासीस लैवो । जे भैंसे नै अवकै मार्यो तो म्हारै जिसो बुरो कोनी है । भैंसे वाळो नीची नस कर'र दूर वईर हुवतो ।

उनाळै अर चौमासै रै दिनां में रात-रात भर आपरी बस्ती रै मिंदर

मारै छवद-बाप्पा बोगावनो। तबला, पेटी, नगाडा, भालर अर भील बगावण आळी मिंदर मे हमेसा हाजर रैवनी।

देवतावा नै भी इसा भगतां री जरूरत रैवै, मोकळा बरस तो कोनी हॅवड प्यार अेक बरस होया है पूरणीयै रै सरीर बरतीजै नै। वो इयै लोक सूं बीसरै लोक पूगग्यो, पण बस्ती रै भिनखां नै अ'र जाण-पिछाण वाळा रै मन मे हमेसा री अेक याद बण'र रैयग्यो।

# लालियो सैंसी

माथै मैलो गमछियो गाबां रो काख में लकड़ी रो टुकड़ो दबायोड़ो, हाथ में आगै मैल रो मुरदांसो गढ्यो लियोड़ो, मोटी-मोटी आंख्यां आळो, काळो-काळो नागलो साबलो आवै है लालियो सैंसी । फूट-टूट गाभा पैर्योड़ो, कांधै री पगरखी धार्योड़ी जठै जीमणवार, तीन धड़ां अर न्यातां हुवै बठै-बठै पूग जावै ।

सेठ-साहूकारां रै छोटा-छोटा छोरां नै रमतियां देय'र अैंठ-जूठ री पातळ्यां मांगै । लोभ रै कारण लालियै सैंसी री खातर टाबर-टींगर जाण-बूझ'र अैंठ जूठ नाखता । जीमण जीम'र पातळ टेयै नै ई देवता । लालियो छोरा छोगे पैलै दरजै रो हो ।

बड़ा आदम्यां नै सेठ साब अर छोटा नै कंवर साब कैयर ई बतलावै । सगळां सूं मीठो बोलै । बानां सूं ई छोरा-छंडा नै मूंडै लगावै । बां रै कैवण रै मुजब ही मेलूंणा लाय-लाय'र देवै ।

सैर में जद अेक दिन अेक सेठ तीन धड़ां रो जीमण करियो । जीमण नै सगळो सै'र उमटग्यो । लोगां री जूती रुखाळै कुण ? आ समस्या पैदा हुयगी । कभी सैंसी-सैंसण्यां बैठी ही पण विस्वास कुण करै । लालियै रै सभाव सूं सै पतीज्योड़ा हा ।

अेक छोरै री निजर मैलै पलियै सूं ढक्योड़ै मूंडै आळै लालियै सैंसी रै माथै पड़गी ।

बो बठीनै दौड़्यो अर बोल्यो– "लालिया बाबा थूं म्हारी सगळां री जूत्यां रुखाळीस नीं ?

लालियै पाछो उथळो दियो– घणो हुकम अन्नदाता, म्हारी करतब कांईं है ? हूं नईं रमाळीस तो बीजो कुण रमाळसी कंवर सा'ब ? थांरो आम थांसूं म्हारो पेट पळै है बापू सा'ब ।

परमसा रा पोथा खोलणा लालियै चालू करिया ई हा क' छोरै कैयो– 'लालिया बाबा, हूं थां रै पालळ बैयर थामूं थे म्हनैं रमतिया देसो ?

लालियै कैयो– हां बापू सा'ब, थांरो भगवान हजारी उमर करै, मोकळो धन देवै ।

छोरो कांईं घट हो । फिर कैयो– थे म्हनैं किसा रमतिया देसो ?

लालियै आपरै भोळै माथ सूं दो च्यार रमतिया दिखाया, अ'र फेर रबड़ री दड़ी । दड़ी देखतां पाण छोरै रै जी में लोभ बड़ग्यो । जीमण हाथ ओछ्यो अर जीम्यो मागूं कर'र उठग्यो । हमेसा सूं आज चोखी अंट-जूठ लाय'र लालियै नैं दीवी । रबड़ री दड़ी लेय'र छोरै ठोडा मनाया । लालियो सैणो समझदार हो । किणी ढंग छोरा पटावणां राजी करणै रो नों मंतर सीख्योड़ो है ।

नित-हमेस अंट-जूठ लेय'र आपरी बस्ती में जावै । बस्ती आळा नैं मीठो-जूठो बेच'र पैसा रोकड़ा कर लेवै । सरकारू काम हुवण रै लारै पैसो-पैसो जोड़तो रैवै । टाबर रै आवै तो बीन मरो बोलणी भणो ओसी रो टको च्यार आठो बार रैवै । नेम सूं रुपिया भेळा करतो रैव । सरकारै सूं था पैसो ई कोनी । चमड़ी भलै जावै पर दमड़ी नईं जावै ।

लालियै रो परवार छोटो कोनी । छोटै सूं लेयर मोटै तक नैं मारण खावण रो काम-काज करै । मैनत मजदूरी रो नईं । च्यार जात होवण रै कारण थोड़ी समझ आळा तो दिन में कमायोड़ा पिसा नैं सराब पीव'र मौज देखता । बां रै लियै तो थोड़ी जीवै तीतर आद दारो रो पत पग आळी बात ही । पण लालियो बड़ो-बूढ़ो होवण रै कारण आगै-लारै री सा सोचतो ।

बिरादरी में भी मरणै-परणै मरणो म्हावण में पग काट'र होम पोसो

[illegible] । पास-पड़ोस रा [illegible] कोनी आवतो । बा आपरी [illegible] [illegible] । [illegible] पैसा [illegible] पूरो [illegible] ।

[illegible] गांव रै [illegible] बस्ती । सगळी बस्ती जंगळ में [illegible] है । [illegible] मर नैसी ई होसी [illegible] । [illegible] । गांस रा भाड़, कपड़ै री [illegible], [illegible] मुगायां । डांडां री छपरो [illegible] मुड्डा बणावै [illegible] ।

[illegible] अर मान वीवण री बीजणी [illegible] । [illegible] ।

[illegible] वड़ी छोरी-छोरां [illegible] माता री गीत उगेरै । वीं रै [illegible] देवतावां री, [illegible] री आरत्यां गावै । लालियो तो कोरो मांगण-[illegible] रै काम आदि दूजो काम [illegible] समझै कोनी । बस्ती सूं आठ-आठ दस-दस कोसां तांई जीमणवार हुवै जठै पूगै ईज ।

लालियो मस्त मौजी रूं रैवै । चिन्ता फिकर अँई-छैंई ई कोनी [illegible] ।

पण सैं दिन किसा सरीसा रैवै । लालियै री बूढी मां सुरग सिधारी । बिरादरी आळां नै मां लारै औसर जीमावण खातर मनमें नित-हमेस बातां पड़ै-तांई । जे कदास सगलां नै नईं जीमासी तो भायां में नाक कटसी । भाई सगळा थूका-फजीती करसी । आखर लालियै ओ निस्चै कर्‌यो क' औसर बंद हुवणो चाईजै । बूढकी मां लारै जीमण जूठण कोनी करियो ।

आपरै भायां नै लालियो नेक सलाह देवै । कुळ री मरजादा में रैवणो अ'र लैण सूं बै लैण नईं हुवण रो उपदेस देवै । कण-कण जोड़नै सूं मण हुवै । सुई लैण माथै चालणै सूं आज दिनै लालियै रै खनै सत्तर अस्सी हजार रुपिया नगद है । सोनै चांदी रै जेवरां री भी भरमार है । पास-पड़ोस रै गांव आळा सैं जाणै है क' लालियो चोखी आसामी है ।

सैर रै अेक साहूकार रै अेक दिन चोरी होयगी विण पुलिस में

रपट करी जिका जिका माथै बैम हो वा रो नाव भी उण लिखायो। लालियै सैंसी रो भी बी मे नांव।

पुलिस पूछ ताछ करण सारू आयी। लालियै नैं थाणेदार बीरा मगळा मना पना पूछ्या। फेर बीनैं कचैड़ी हाजर हुवणो पड्यो।

कचैड़ी मे लालियै भी आपरो उकील खड़ो करियो। अब अदालत मे पूछताछ चालू हुयी। विण बखत पोलिस रो उकील ईं नैं पूछै– थारो काईं नाव ?

लालियै उथळो दियो– अन्नदाता म्हारो नाव लालियो।

'काईं जात ?"

"सैंसी।"

"रैवै कठै ?"

"मुरासर।"

पुलिस रै उकील फेर इण नैं साऊकार री चोरी करणै रो कारण पूछ्यो। लालियै उथळो दियो-माइता, म्हैं आज ताईं कैरो ईं नू बो पईसो कोनी उठायो। भगवान री अ'र आपरी दया रै कारण म्हारै पैसे री कमी कोनी।

उकील कैयो– 'लालिया, पैसे आळो काईं चोरी कोनी करै ?'

लालियो बोल्यो– माइता, आपनैं म्हारो विस्वास किया होवै ? हू धरती माता री अर अदालत री सोगन खाय'र कै सकूं क चोरी आज ताईं करी कोनी। म्हारी जात रा लोग सै बारै म्हारी साख देवण सारू उभ्या है नईं पतियारो हुवै तो उण लोगा नै आप पूछ सको।

पुलिस रो उकील तो आगै कोनी बोल्यो, पण लालियै रै उकील आपरी साख सबूता सगळी जज रै सामैं हाजर करी। लालियै री साख देवण नैं लोगा रो जुट देख'र जज अचूंभै भरीज्यो।

जज नैं पतो लागियो क लालियो सैंसी भळ-भळो मानवी है। नगद देखणे रै अनावा ईं रै दो-दो मोटरा भी भाड़ै री चालै। लालियो बोर्ड

पेट आळो है। सच्चो अर नेक। कुटम्बै री ईमानदारी नालियै री खासी रैवै।

मन री अठ हमेसा हरी रैवै। बोलण-चालण, उठण-बैठण अ'र खावण-पीवण रै सागै आदमी रो ध्यान जीवन री सफाई अ'र सच्चाई कानी रैवणो चाईजै आ बात नालियै सीगी आप रै बाप दादै बचपण में सीखी।

अवस्था रो अबा'र अन्दाजे साठ-पैंसठ रो हुयग्यो हुसी, पण मांगण अ'र गावण आळो काम काज कोनी छोड़ै। बदळाव आळा जमानै नै देखतै मांग'र खावण रो धंधो छोड दियो। आप रो काम काज सभाळ्यां बैठा है।

पण जीमण-जूठण आज भी जद कठै ई होवै अर नालियै सीगी नै मालम पड़ जावै फेर' ध्रुव चुकै तो ओ चूकै।

नागी तरवार, नागी पोसाक अर बगल में दबायोड़ो लकड़ी रो टुकड़ो, माथै पलियो नाख्योड़ो, पगरखी रगड़तो आवतो दीखसीं'ज। असो है नालियो सीगो।

# आंटियो बावो

बूढा माइता अर देवता पुरसा मे फरक कोनी । हिरदै सू सुद्ध सभाव रा भोळा ब'र ठंडो-तातो मा दरयोडा हुवै । टाबरा नै हमेसा कोअी न कोअी अनुभव री बाता बतावता ई रैवै । आछै मारग चालण रो उपदेस नित देसी । चावै घर रा हुवो चावै पारका । उणा री द्रिस्टी मे सै समान हुवै ।

आजकल रा छोरा वा रै भासण-उपदेसा नै रेडियो बकै ज्यू बकणो समझै । कैणो मानणो तो बोत दूर रैयो । बूढिया आ समझ'र चुप हो जावै क अै नूंवी सदी रा नूवा छोरा है, आ नै ज्यादा कंवणो-सुणनो चोखो कोनी लागै ।

अिसा भोळै-माळै सभाव रा सत पुरस हा आटो बावो । आंटियो नाव तो आटी टाग्या सू पड्यो ।

आटो बावो अर आटकी जाळ दोनू परसिध है । रग काळो घुट्ट जाणै हाथ लगाये हाथ काळो हुय जावै आटी टाग्या, चैरो सोफळियै ज्यू डफोळी, तीखो नाक, मांय बड्योडी आख्यां, काना माथै लाबा केस, हाथा अ'र पगा मे अिता रू', जाणै आगे सू रीछ दीखता । अंधारी रात मे कैकल-दुकल छोरा आ सू डर'र दैली'ज जावता ।

आटकी जाळ रै हेठै हैरा डाळ्योड़ा रैवता । मनै तळाई । धू-दुपारै रा छोरा छडा मदरसै सू आय'र जाळ माथै धाड़ धुकड़ खेलता । मोनी रै गुच्छै ज्यू सूम-चलूम जाळिया नै तोड-तोड'र खावता अर लैजावता ।

नरे-कड़े छोरा आठ गा रूड़ा गोहण नामता जो देखा आंटियो बावो आसण सूं उठ'र छोरां सागै डांग लेय'र दौड़ता।

छोरा तो बानर सैना है। वै सगळा मिळ'र आंटियै बावै नै छेड़ता

आंटिया बाबा आटकी टांग।
आटकी आळकी आटकी टांग॥

आंटियो बावो थोड़ी देर तो नमियो करता, पछै आय'र चुप-चाप बैठ जावता।

आळ रै नजीक अेक तळाई। बरखा रै दिनां मे पाणी सूं हवा-हौज भरीजती। छोरा उण तळाई रै बारै धोबारियो मार देवता। कठी कपड़ खोल'र न्हावण नै बड़ जावता। पाणी में छपळ-छपळ री अवाज हुवती जद आंटियो बावो धीरै सीक तळाई रै घाट माथै आव'र बैठ'र जोर सूं सिंघ गरजना करता। छोरा एक मुठ्यां में पार हुवता। आंटियो बावो अणजाण बाळकां रा रखवाळा हा।

कामकाज आं रै घणी मैन'त रो हो। भोर रा वेगा-वेगा उठ'र आपरै वाड़ै जांवता। गाया नै घास नाखता, ग्वांर देवता, पछै दूध दूवता। गाय रै ऊन मायसूं झाड़ झड़काय'र दूध कोनी निकाळता वछड़ै रै दूध भी आधा सेर खण छोड़ता ईज दूध बंध्यां आळां रै टेमोटेम पूगावता। मईनै रो मईनै आपरो सगळो हिसाब गाड़कां सूं कर लेंवता इयां पेट पूरती करता।

आठ साढ़ै आठ रै अड़ै-गड़ै पाणी रो पूणियो घड़ो लैय'र मोल रो नांखता। अेक घड़ै रो अेक आनो। नित-हमेस रा तीन रुपिया टांट में घालर घरै वड़ता। कदै निकमा कोनी रैवता।

आंटियै बावै रै मूंडै लाग्योड़ै माणकियै अेक दिन आं नै पूछियो—
"आंटिया बावा, थांरै आगै-लारै कोई खावणियो कोनी, थे क्यूं पैसा भेळा करो।"

आटिये बावै उथळो दियो– 'अरे भाई माणस पू हालतांई टावर है ई गई समझै । मिनख नै कदै टाणो बैठणो ई नई । मिनख नै मजूरी क'र पर मे पड़नो चाईजै । केम सुगरी नीद आवै । मारगियो हल'र दूर रावतो ।

इण बगावण मे आटियो बाबो बड़ा हुसियार । गटी,गुवाड़ मे आरै गान्वर डफ बजावणियो कोनी मिळतो । होळी रै दिना मे आती जिम डफ आरै हाथ मे रैवती । गाजे पेमियां नाई थमरी बजावणियो । थमरी री धुन मे जद 'काजळियो' गीत मट हुवतो, वीं वगत वैवणो बटाऊ पग थाम लेवतो ।

ओक गीत पूरो हुवण मे एक घटा नेड़ो लागतो । बीच-बीच मे पेमियै री थमरी अ'र आटियै बावै री डफ री तेज सुणावणी हुवतो । सुणणिया मिनखां री भीड़ जुट जावती ।

होळी रात रा जद कदै पेमियो अर आटियो बाबो भेळा हुय जावता, जी केळा 'पणिहारी" रो गीत थमुरी माथै गवावता अ'र खुद डफ बजावता । आटियै बावै री राग भी कृवा राग ही । बड़ा मीठै गळै रा मीठै सुरा रा धणी हा ।

आटियो बाबो कदै-कदै मजूरी करण सारू खेता मे भी जावता । गाड़ी बळध तो आ रा घरा-घर हा । बळध अिसा दीखता जाणी वारै डीला माथै माखी तिसळै । खवावण पिलावण मे जानवरा नै बोत सोरा राखता । इं कारण नजीक रै खेता मे आ रा बळध बीज जल्दी पुगावता । जिकै दिन बरी बळधा री जोड़ खडत हुयी वी दिन सू आ गाडी बळध लगोट कर्‌या ।

म्हूं ओक दिन आनै पूछियो– 'आटिया बाबा, थै गरमी रै दिना मे गाडी-बळध लायर पाणी रा घडा क्यूं नीं टाळो ?" केसर देसर रो कुवो तो घणो दूर है ? आ दळती उमर, ओ पाणी ढोवणो ।

आटियै बावै उथळो दियो– बेटा, गाडी बळध हा जिका दिना मे कमाई रावता । हूं अिसा-विसा बळधा री जोडी कोनी राखू ?

फेर उणनै देखर अचम्भा मा डूबग्या कै केयां'क आ काँई बात है? आदियो बाबो निगाणा डूबग्या नाईं ।

पण थोड़ी ताळ पछै बा आपेई केयो देख बेटा, म्हारा बळद पाल्योड़ा पोस्योड़ा नांव सूं अेक नै किणी नाग सूं मार दियो । मरते अेक मिन्ट सीं'क लाग्गो । आ म्हारै करमा री बात है, जद तो कैवै'क

"करम हीण खेती करै, बळद मरै कै काळ पड़ै ।"

आदियो बाबो भोळा हिरदै रा हा । भगवान माथै विस्वास करता ।

बीज तिवारां माथै आदियो बाबो फीटा-फीट रैवता । दई री जात सफेद धोळो अं'र धोती । माथै टोपी खादी आळी, कानां में खस अर गुलाब रा फूया लगायोड़ा । गूंजै में नूवां नोट घूमण नै जिकी गळी सूं निकळता वा गळी कई देर ताईं खसबू देवती ।

अिसा सोन्वीन अर मन मौजी आदमी हा । सीयाळो आंनै घातीक रैवतो । कभी न कभी बीमारी-सीमारी आय'र अेकर आंनै मांचै सईणी कर देवती ।

कोई पांच सीयाळा गया हुसी आंदियै बाबै नै खूट्या नै । जद कदै आटकी जाळकी खानी निजर जावै आंटियै बाबैरी याद देखण आळा लोगां नै आवै ई ।

# गरीबदास जी

हिरदै रा भोळा-भाळा हा गरीबदासजी। सभाव सतजुगी लोगां री दांई। जिमो वां रो नाव विसा ई घर सूं गरीब। ताजो कमावणो अर ताजो खावणो ई' वां री जिनगी मे लिख्योड़ो। घरबार मे धणी लुगायी दोय। आगै-लारै कोयी कोनी।

दिनूगै भिक्षा रुखी सूखी रोटी मिळ जावती वी मे ई दोनू सतोखी बण्या रैवता। किणी बात रो सोच-फिकर उणां नै कोनी हो। भाग पीवण रो सोख अर घरको मीठो खावणरो सोख कदै-कदै कोई जजमान रै घेतणै सूं माग'र पूरो कर लेवता।

नौकरी अ'र कामकाज आरै घरबार मे कोनी हो। बिरत-बाड़ी री घणी अखी। सरीर मे ठीक-ठाक, रंग गळ भरणो अ'र आंख्यां लाल चट्ट पीळूं भात। पैरण में गैनो सोक अगरखो अ'र धोतियो। पगां मे कादूमोडी पगरखी। घर सूं निकळता जद जरदै री रगड़ाई हथेळी मांयी करता रैवता। बारै कोई सैंधो अण सैंधो मिळ्यो वींनै जरदै री मनवार करता ईज। गरीबदास जी मन मसाव रा हा।

ना कैरी हायजी-देयजी अर न निदा- अस्तुति। आ मगळा सूं बारै चोस दूर रैवता। दिनूगै रा बिरम में घूमता अ'र भिक्षा बिरत सूं लायोड़ै सामान री रोटी-बाटी बणाय'र खाय पीयनै दोनूं धणी-लुगायी पूंगी बण जावता।

वी दिनां मे सैर में चोरयां बोनमी जगै हुवती। रोजीना चोरी-जारी रा समचार लोगां मे सुणीजता। आज फलाणै रै चोरी अ'र काल फलाणै

[illegible] मांगी हुयां । पण गरीबदास जी नै ई बात रो रत्ती ई ध्यान कोनी रैयो आपरी मस्ती में मस्त रात-दिन भजन में निमग्न रैवता । 'फकै जिको भुगतै' आळी [illegible] नै मानता ।

अेक दिन मिनख आधी रात रा आं रै घर में च्यार चोर चोरी करण सारू ढूकग्या । गाम वाळां नै नींद में सूता मोठा छूटता लेवै । चिड़ी री आवो ई गांगी जावै । जिण दिन रात जावै गळी रै गंडका सगळां ई भांग पीवी होवै ज्यूं पड़ग्या, कोई भू कै नईं ।

चोरां नै मोको लागग्यो । वै ज्यूं औसर चूकता । मौकै रो फायदो उठावै जिका ई मिनख । चोरां आं रै घर में घुस'र सगळा आळा-ताळा सभाळ्या । सोच्यो अबै माल कठै मिलसी ? खूणो-खूणो खोजतै घणी रात बीती । चोरां नै भूख तिस लागी । वां खावण-पीवण रो अेक-अेक ठांव जोव्यो, पण अेक दाणो भी खावण सारू कोनी मिल्यो । बाकी रा चोर तो आ देखनै भागग्या क' अबकै बिना बात कठै पकड़ीज नीं जावां । भूखां मरता, तिरसा मरता जिका दौड़ण आळा हा सै नाठग्या पण दया वाळो दयाळु हुवै ।

गरीबदास जी री गरीबी देख'र अेक चोर रो हिरदो पिघळग्यो । बिण सोच्यो क' आं रै घर में खावण-पीवण सारु कई कोनी. आं रो गुजारो कियां चलै । मन करुणा सूं कुरळावण लागियो । चोर रै चैरै आगै गरीबी रो चितराम खंचग्यो । वो आपरी सुध-बुध बिसार'र जोर २ सूं कूकण लाग्यो । कूक्यो तो अिसो जोर रो कूकियो कै गळी गुवाड़ रा सै जागग्या । पण गरीबदास जी अर आंरी लुगायी दोनूं ई कोनी जाग्या । दोनूं नींद रा खरांटा भरै । आं रै चिपतै घर आळा पड़ोस्यां मूं फाड़'र हेलो मार-मार'र वां नै नींद सूं जगाया । अै निस्फिकरा सोवता ।

पैल-पोत गरीब दास जी री आंख खुली । वां सोच्यो ओ रोळो किण रै मकान में हुवै । फैर जद हेठै उतर्‌या तो देख्यो क' कोओ मिनख आं रै ई घर में रोवण लाग रैयो है । भोळापण रो हद हुवी । गरीबदास जी गजब रा भोळा ।

रोवनै मिनख नैं वा पूछ्यो— तू कौन को छोरो है ? तोकुं पेट तो कोनी दुखै। बोल काईं चावै है ?

चोर उथलो दियो— मारा'ज हू चोरी करण नैं आपरै घरैं आयो। म्हैं देख्यो क' कईं न कईं रुपिया पइसा, सोनो चांदी मिळसी पर थारै घर री सगळी खूणो खचूणो सभाळियो। घणी रात बीतगी। कईं कोनी मिल्यो। भूख जोर री लागी। बरतण-भांडा समाळ्या पण दो दाणा ई धान रा कोनी मिल्या। मारा'ज मनैं घणो दुःख हुयो। आंख्या मे आंसू ढुळकग्या। था री जीवणो कोकर हुवै ?

गरीबदास जी बोल्या— अरे बावळा, म्हारो नाव ई गरीबदास है। थनैं कुण कैयो क' हू अमीर हो। मागणो अर खावणो म्हारो काम, फेर नींद मजै री लेवणी। ना चिन्ता ना फिकर। धन वाळा री नींद उडै, पण मन वाळा रै मौज।

बो चोर गरीबदास जी रो उथलो सुण्यो अर दूर'र बहर हुवण लाग्यो।

इतैरै मे गरीबदास जी बोल्या— अरे सुण भई, काईं जळ •ळ तो पी' जा।

चोर लाजामरग्यो अ'र बोल्यो— मा'राज, म्हारी भूख अ'र तिस दोनूं अ'बी बदगी। जद समार मे गरीबी भोग'र आदमी सुखी रै सकै अ'र मिलै जित्तै मे सतोस धारै फेरु हू किण रो वास्तै चोरी करूं। आज सूं म्हारी आदत सुधार सूं चोरी री सौगन। आ कैय'र आसू ढुळकावतो चोर रवानैं हुयग्यो।

गरीबदास जी फेर हेठलो आडो ढक'र पाछा डागळै चढग्या अर सुख री नींद लेवणी सरु करी।

भोर मे गळी-गुवाड मे लोगा नैं ग्यान मालूम पड़ी जद सगळा मूं'डै आंगळी घातली।

इसा समम आळा, भोला-भाळा हा गरीबदास जी। न टकै री लैण न टकै री देण। पण मस्ती मे कमी कोनी ही। फकड ज्यूं जीवण बीतावण आळा हा।

# हऊफानाथ

नाम सो अंटग्मी अटपटो सागजी. पण गुणां रा गंभीर अ'र वातैई गहणा रा गोभो अ'र गेनादा रा फदड़ पंत। नगदी वातां आप इयां ऐंगर नतीजा। ईं परजातंतर में जिणी आरै ताई आयो है विसो कि दे ई नोगी। आ ई जीवण में अेक ई वात री विसेसता है। बोलणो मिसर निररो, फाड़सी थान रा थान, पण अेक गज ई हाथ कोनी आवै। अ पणा मतळब सभाव रा है।

आप नूं नाक रा जायै, पण पत्तो कोनी चालण दे। रूपरंग रा फूटरा फर्रा. धोळो धारी रो कुरतो पैरण नै, धोळी धोती अ'र धोळी टोपी। वा भी जद जचै तो लगावै नीं तो नीं सरी। चप्पल सस्ती अ'र मोकळा वरस थान राखै, अैसी पैरै। आरै घर में रैवण रो ढंग निरवाळो। लंगोट मारण नै अर अंगोछो पैरण नै। वाकी आखी रात उघाड़ा ई नींद लैसी। दिनूंगै न्हाय-धोय'र फोटा-फोट। अपनै आपनै वोत बड़ा नेता समझै।

वात खरी भी है। अणजाण लोग भी आंनै कोई वोत बड़े नेता सूं काम कोनी समझै। जितै ताईं अै अेक ई सबद आपरै मूंडै सूं नीं निकाळै, विण वखत ताईं लोग आनै सरधा अ'र आदर भाव नूं परखसी। पण आं री द्रिस्टी गीध द्रिस्टी रैसी।

आं रो काम-काज लोगां रा कान कतरणा। माछली सूं लेय'र मगरमच्छ निगळ जावै तो कोनी वासण दै। आंरो ध्येय समझो चावै नारो समझो अेक ही है "जै मतळब री"।

वीन मरो चावै बीनणी, जोसी रो टको त्यार आळी वात आं नै मन

रमतो लागै । अेकर दुकान पर मूं कोनी निसरूं । मागै च्यार भायला अंर च्यार पाव दद्दा । ले मिठ-खावक रो पाठ पडिपोड़ा । आ सगळा री द्रिस्टी मे हानिकर रेवै । पोटो पड़ै जठै कदी न कदी उठावै ईज । जठै हुक्कानाथ जी रो पड़ाव पड़ै बठै कदी न कदी फायदो अवस हुवै ईज । वे बड़ा दातू पोम अ'र सूमचा-खोस है ।

राजनीति मे खुद नै धुरंधर पंडित समझै । चुणाव रै दिनां मे चुणाव रै अखाड़े मे "जै बजरंग बली री" जगै "जै मतळब री" केय'र कूद जासी । नीरै सूं नीचो बर अूंचै सूं अूंचो काम काज करण ताई त्यार रैसी ।

बड़ा-बड़ा नेतावां नै अेकर इयै पजै फसासी क' भट सूं निकळ'र वी गई भाग सकै । ज्यूं पक्योड़ो आम खाय'र गुठली फैंकीजै बिण तरै अै बिण नेतावां रै भाटो लगाय'र सफाई करदै । आपरा अ'र पराया आ रै समान है । पैसा लूटावणियै रा अै सीरू है ।

हुक्कानाथ जी नै हुक्का मारण रो सोख । इयै मे भायला चुणाव मड़ै या काम भोळावै तो भी पैसा लागै । अविस्वास जद कदे चुणाव रै पाछै मैंबरां में पदीजतो, अै पग्मा गटकावण आळो काम जारी राखता ।

ईं में भायलो-मयैलो कोनी गिणीजै ।

मूंवा-नूंवा ऊगता छोरा नै अै पैली आपरै मण्डल मे ले'गी । वां री परसंसा रा पूळ धरती सूं आभै ताई बाध देसी । पण जद कदै वा नै छोड छिटकाय'र अळगा हुसी, बिण बगत वा छोरा नै इणगीं रा रासै न कोअी बिणगी रा ।

हुक्कानाथ जो बड़ा चाल-बाज । समाज सेवा रो तो आ रो नेम, थोड़ मे घर-सेवा सगळां सूं पैं'ली । जठै खायकी दोलसी बठै पैला पूगसी । दो जणां नै लड़ाय'र बीच मे पचायत खुद करसी ।

अेक दफै लीवलै जाट री लुगायी रा गैं'णा चोरीजग्या । बिण पुलिस में रपोट करी । पुलिस लीवलै रै घरै घेरा घालै । भाग-सुभागै हुक्कानाथ जी बटीनै सूं निसर'र्या हा । पुलिस नै देखी जद आप भी बठै पूगग्या । लीवलै नै सगळी बात आ पूछी । पूछ-ताछ'र आप खुद बिण मैं आ 'कैयी

ग' आगै पूनिम सूं पैलां इकठा'र मेळो दिखाव देणूं । आपरी भेट पूजा तो...
करसी । पइसा गायनदा अर रोवण आळो गैलो मीवनो जाट ।

धरम-करम रै काम में अै सगळां सूं आगै । संता रै घणै सूं लेव'र... तीरथां ताईं आप सुगना भगती दिखावै । जद कदै मठ में नूंवो मठाधीस... बैठ'र मैं कठैई रामायण-परायण या कीरतन करवावै हऊफानाथ बठै त्यार । वां नै आ मालम पड़ जावै क' म्हारा'ज अठै गरजो घणो करसी । मतळब अेक कैवत आळी बात है क'–

> जठै मिलै गाडू-चूरमो बठै नंदू त्यार ।
> अर जठै बाजै लट्ठ धड़ा-धड़ बठै नंदू पार ॥

सीठै धान मिलै त्यार अर लड़ाई झगड़ै सूं पार । धरम रै काम-काज में भी सिट्टो सेकणै री आं री नीयत रैवैईज ।

मेळै-डयोळै, होळी-दियाळी, उच्छव-परब माथै हऊफानाथ हाजर राहाजर आंरी दूजां नै बतळावण रो तरीको बड़ो चोखो आवै । चावै अणजाण हुवो चावै जाण-पैचाण आळो । आप चलाय'र इयां बोल्सी– कैवो पंडित, तबीयत मजे में है, काम-काज चोखो चालै, म्हारै लायक सेवा हुवै तो भोळायै । लाज-सरम री जरूरत कोनी । आ कैय'र आपरै पट्ठां खानी सामो जो'सी अर कै'सी– 'ओ छोरो बड़ो सै'णो-समझदार है । बुधको घातण जोग । आप सूं बड़ा रो हमेसा हुकम राखै, आगां री बात कदै कोनी टाळै ।

नूंवो छोरो आं री परसंसा आळी बात सूं लजखाणो पड़ जासी, अर गरदन नीची कर लैसी पण आं नै जाणन आळा तो आं री अेक-अेक रग-रग नै जोण लैं'सी ।

जगै-जमीन दावण में हऊफा मारणा, खावण-पीवण में हऊफा मारणा खात्यां में आगै बढ़-चढ़'र बात्यां अर रुपिया विखरते देख'र रुपियां खांनी हऊफा मारणा अ'र सिट्टो सैकण रै कारण ईज लोग आं नै हउफानाथ कैवै ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

# मा'रजा

सतजुग नीसरेई रैगो पा गई देख्यो, पण मनवारी लोगां री जमानो अलग हो। जिकै में ई कळजुग में आ पोसां नै संत साधुवां री गिणत में गाणीजै। पोसवाळ अर मदरसा टाबरां नै पढ़ावण रा चोखा ठोर कैईजता। पढ़ावण आळा मारजा गुरुजी जिका री नजर परमेसर सूं दूजो होवै। सै माइत आप-आप रै टाबरां में आ भावना ठूंस-ठूंस'र भर देवता। पोसवाळां में गुरुजी पाटी, गुणा, जोड़-बाकी रै सागै-सागै दुनियादारी रो ग्यान भी टाबरां नै देवता। राजावां रै राज में ऊंची-ऊंची सिक्षा रा मदरसा कोनी मिळता, जणै बजार-हाटै रै काम-काज सीखावण सारू मारजारी पोसवाळां री गुल्योड़ी ही। सेठ साहूकारां री दुकानां माथै मुनीम री जगै अलग-अलग मारजावां रा चेला काम-काज करता।

आ मारजावां मे नामी-नामी घणाई हुया। लिखमो मारजा, भत्तीयो मारजा, काला मारजा, अर कोड़ियो मारजा, पण फकीरो मारजा आपरी पिरकत रा अलग ई हा। सभाव रा मस्त, हंसाळु अर दयाळु कदै टाबरां नै जोर सूं कोनी मारता। बिया लिखमा मारजा रो भणावणो अ'र मारणो दोनूं ई परसिध हा। फकीरा मा'रजा रो भणावणो अर लाड-कोड रा गुण आज ताईं मोकळां रै मूंडै सूं सुणीजै। मा'रजा गंगा री तरै निरमळ सभाव रा हा। हिरदै रा कंवळ सूं ई कोमळ। ईं कारणै आं री पोसवाळ छोरां सूं भरी रैवती।

मारजा मैंनती अर कामैंती हा। कदै खाली निठल्ला कोनी बैठला। कोओ न कोओ काम चालू रैवतो। पोसवाळ तीन वेळा चालती। भोर सूं

ग्यारह बजी ताईं । दुपारै रा बारै मूं च्यार बजी ताईं अ'र फेरूं सिइया पड़ी पाछै । बी बेळा माळणी अर पहाड़ा पढ़ीजता । अंकै-अंक मूं लेय'र पोक मीनगो ताईं छोरा माळणो बांचता । जद बानै छुट्टी हुय आवती । छोरा मा'रजा रै चरणा रै हाथ लगाय'र फेरूं घरै जावता । मारजा रोटी ग्वाय'र नींद रा मरड़का लेवता ।

परमेसर री भगती अ'र सरधा मारजा में पक्की ही । आं सस्कारा मूं बां रा चेला-चांटी पीछै कोनी रैवता । मंगळवार अर छनिवार नै हड़मान जी री पूजा मदरसै मे हुवती । पइसा छोरा कनै मगायर कई भाग आळै जेब मूं भेळ'र धूम-धाम मूं पूजन करवाय'र छोरां नै परसाद बांटता । ईं मूं छोरा मा'रजा री पोसवाळ मे हरख चाव मूं आवता ।

गुरु पूरणिमा माथै छोरा रा बाप मारजा मूं मिलण-भेटण आवता अर रुपियो नारेळ सरधा सारूं आ रै चरण कंवळा में राखता । टाबरा रै मन में ईं बात मूं मा'रजा रै कानी घणो हेत अ'र सरधा री भावना पैदा हुवती । मा'रजा पूजण जोग हा ।

आ री पोसवाळ री खोलण आळी टैम सरसुती री असतुति आराधना हमेस हुवती । पोसवाळ मे कदै सौ छोरा अर कदै दो सौ छोरा भरती रैवता । फैया मूं दो रुपिया महनो अर कै मुफ्त । मारजा रै दो सौ डाई सौ रै अठै-गडै महीनै रा रुपिया हुय जावता । अेक-अेक छोरै री ध्यान मारजा राखता । हरैक नै रोजीना रो काम काज मोकळो करावता । जिको छोरो काम-काज कर'र कोनी लावतो, बिण छोरै नै आगली गोदी मे लेय'र पैली लाड-कोड मूं बतलावै । फेर छोरो जद ममगरी मूं हंम'ण लाग जावतो बिण समै मा'रजा छोरै नै पूछै-मगूं बेटूटी, थोन थारी समझ मे पहाड़ा(पाडा)कोनी आवै । जे नीं आवै तो फेर समझ्या मू । यूं तो फुटरो-फरो अर लाडेसर है । आ कैय'र मारजा आपरै टाबरा रो मूंडो चूमता । जे कोई छोरो बदा'म नईं मुळकतो जद अे आप आडी दाडी रा केस छोरै रै मूंडै मूं चुभावता । इयै कारण रिसाणो छोरो ई हंसन-मुळकण लाग जावतो । जद मारजा बिण ने फेरूं पाड़ा, जोड़, गुणा, बाकी, भाग

सीखावता । या तो कैणो हो क' मार सूं टाबर बिगड़ै अर लाड प्यार सूं भणै अ'र सीखै ।

बालक मन रा मौजी हुवै । वां रो सरूप भगवान रो सरूप हुवै । इसो भाव मा'रजा रै आगै टाबर-टोगरां नै मारतां नावतो, मा'रजा बिण नै फटकारता । आ कैवता क' "थूं इण नै कोनी भणा सकै" मारणै सूं टाबर ढीठ बण जावै । मार में सा'र कोनी । फेर बिण रै छोरे नै आपरै कनै लाड सूं बैठाय लेवता । टाबरां रै वास्तै मा'रजा रै हिरदै में अणथाग दया ।

पोसवाळ री छुट्टी करणै सूं पै'ली छोरां तनै मा'रजा कई न कई गीत गवावताईज । रोजीना रा उणां रै मूंडै सूं बिण गीतां नै बोलावता । गीत इयां नीचै लिखै मुजब है—

काळ चिड़ी अे काळ चिड़ी
सौ-सौ घोड़ा ले पड़ी
अेक घोड़ो आरंपार
ज्यां में बैठा मियां कलां
काला है किशन जी
गोरा है मुकन जी
परमेसर रै पांय लागूं
हाथ जोड़ विद्या मागूं

ई गीत री समापत करण री लारली कड़ी है "गुरूजी पकड़ी चोटी चोटी करै चम-चम, विद्या आवै घम-घम ।" हरेक छोरै नै अै गीत चोखा याद हुयग्या । गीतां री मीठा'स अर परमेसर सूं भोळा बालकां री विद्या रै वास्तै विणती कितरी सोवणी अर मन मोवणी लागती ।

चोखै २ परब माथै अर त्यूआरां माथै पोसवाळ री बेगी छुट्टी कर देवता । मारजा छोरां री रग-रग रा जाणणहार मेलै-ढवोळे खुद भी जावता अर छोरां नै जावण री प्रेरणा देवता ।

मारजा आपरी पोसवाळ रै समै रै पछै कदै-कदै अंगरेजी भणन आळां

छोरां नैं पढावण आवता । गणित भणावता । व्याज रा सुवाल, अंक-अंक नियम रा सुवाल तो मारजा रैं हाथ रो खेल । समैं दूरी अर समैं काम रा सुवाल भी छोरां नैं पढावता । मा'रजा घणा हुसियार ।

बुढापैं में मारजा रै दो सोग पडग्या । वैं दुर्व्यसण हा । लाल तावडै भरणी चाय पीवणी अर मोटोडा भुजिया खावणा । मारजा रा दांत सै खिरग्या हा पण भुजिया मोटोडा चूंसता रैवता । गाबा मायं झूरिया पडियोडी, मल-मल रो झीणो चोळो अ'र पतली धोती धार्‌योडा, हाथ में लांबी लकडी लियोडा मा'रजा मिढ्या दिनूगैं घूमता रैवता । रंग काळो सो, गळै में काला मिणिया री माळा लल्लाट माथै राख री टीकी लगायोडी नित हमेसा रमता । टाबरां रो मन राजी, जद मारजा रो मन राजी । अै टाबरां मांय लूम-झूम हुयोडा, टाबरां नैं भगवान रो सरूप मानण आळा अेक दिन भगवान रै सिरी चरणां में पूगग्या, पण आप आळी छाप बूढा-ठेरा अर बाळक-जुवानां रै हिरदै मे छोडग्या । नाव फकीरो मारजा, पण सभाव फक्कड आलो ई हो । मस्त फक्कड री तरै सूनी पोमशाळ छोड'र रमताराम हुयग्या ।

# चौपनिया

मसखरा अर गुलछर्रा छोड़न आळा हरेक गै'र में मिलै। बड़े-बड़े राजदरबारां रै माय गुलछर्रा छोड़णियांरी बोत पूछ। बात-बात में हंसावणो-मुळकाणो, सभाव सूं दूजा लोगांनै राजी राखणा हंसी-खेल कोनी हो सकै। जिकांरो दिल दरियाव होयै अर आगली-लारली बातां माथै सोचै-विचारै अर हमेसा हंसता रैवे विण मिनखांरो जीवण धरती माथै सफळ होवै। जठै-कठैई सरणाटो छायोड़ो रैवै बठै गुलछर्रा छोडणियां आप आळो काम चालू राखै। वां री जुबान री लटाई (चरखी) खुली चालै। बोळण रो कन्नो आगै सूं आगै वधरतो रैवै। गोच सावण री कठैई काम कोनी। वात्यां रा फर्रा जद अै मारणनै बैठै विण समै रात सूं भोर उगायदेवै। आप-आपरी सुद-बुध भी कोनी रैवे। समै घड़ीक सो बीत जावै।

गुलछर्रा छोड़ण में गोकुल सा परसिध हा। आं रा चौपनिया जद सुणता तो लोग हंस-हंसर लोट-पोट हुय जावता। आप आळै काम धंधै सूं निपट'र जद कदै पाटै माथै आय'र बैठता वां वखत लोगांरो, टाबरांरो अर नवयुवकां रो झुंड आंनै घेर लेवतो। आंरी लच्छेदार वात्यां अर बोलणरी आदत नै सगळै सरावता। गोकुळ सा परसिध वातेरी हा। लंबी चौड़ी वात जद सरू करता तो संवत् मिती भी कोनी देवता। पण वात अैसी काळजै री कोर सूं फेंकता क सुणन आळै री कानांरी खिड़क्या खुल जावती। वड़ा वात-पोस अर संतोष राखणिया पुरुष हा।

गोकुळ सा मैनती अर कामैती। घणी-फुरसत आंनै कोनी ही। निकम्मा कदै कोनी बैठता। रसोई वणावणमें आं रो रिकार्ड हो। नामी

रमोईया। सूमचो दयावधरो मौको भी हाथ नूं कदै कोनी छोडता।

चौक रा लोग गोकुळ मा रा चोपनिया सुणन नै त्यार बैठा रैवता वा रै बोलण रै समै में बीच मे टाग कोई कोनी अडावतो। वा रै मूंढै सूं कवारी मडी लाग जावतो। अेक गुळछरें रै मार्थ दूजो गुळछरों। अैं वडा दरीवाव हा। परदेस जावता तो रसोई वास्तैई। रसोई आ रै मनरी मरजी सारै होवती। कदै चलाय'र कैरैई घरै कोनी जावता। गोकुळसा खरा अर मन्ना आदमी हा।

ईसर भगति अर नित-नेम में कदै कोनी चूकता। चावै बीकानेर में हुवो चावै कळकत्तै-मुंबई। आरो भगवत भजन चालू रैवतो। आं री ओ विस्वास होवै परमात्मा देवै जद छप्पर फाड'र देवै। सच्चे मन सूं बी रो सुमरण करण माळा हुवणा चाईजे।

सीयाळै री वात। गोकुळसा चौक मे धूणी मार्थ बैठा हा। रातरी करीब आट-नौ रै अडै-गडै ही। वा आप आळा चोपनिया उथळना सरू करिया। थारी वात रै माय वात जोडता अेक जणै कैयो—गोकुळसा! या नै रसोई तो मोत चोखी करणी आवै, पण था बतावो कै ५०० आदम्या री भाखर कितरी वेळा मे त्यार कर सको।

गोकुळसा उथळो दियो - अेक घटै रै माय-माय पांच सौ आदम्यारी रसोई वणै।

मारी आपरी बात रा गुळछरा सरू करियाईज। वा कैयो—अेक दफै कळकत्तै री वात। मोकळा बरस वीतग्या। जद हूं जुवान हो। कळकत्तै री गगा मे न्हावणनै रोजीनै रा जावतो। नित-हमेस करीब २ दो-तीन घटै गगा रै इणै पार सूं बिणै पार ताईं तैरतो। अेक वणियाणी ही। जिकैं रै कोयी रसोईयो कोनी हुवयो। विण नैं दो-तीन घटै छेडै पांच सौ आदमियानै भोजन करावणो हो। विण सगलानै न्यूतो भेजाय दियो। पण वखत हुवण लागो। रसोई रा राड़-खोज ई कोनी सेटाणी हक्को-वक्की हुयगी। विण मनै याद करियो। वी म्हारै घरै सनेसो भेजायो। पण लोगा म्हारो ठिकाणो गगा रै किनारै मिळण रो वतायो। सेठाणी जाय खुद

सेठाणी माथै पड़'र गंगा रै पार माथै आयो । या अठीनै-उठीनै झाला मारै । पण गोकुळसा तो गंगा रै गढ़ ईंयै पार करै त्रियै पार । अबकै जद सीं' पार सूं पाछो आयो क' सेठाणी बोली गोसी अर चमकतै चदरै में उभी-उभी नाक मेलो सी । म्हनै पैस पडूयो क' आ म्हनै ई अडीकै । वीजो रह कुण हुवै जिकै नै विणियाणी अडीकै । जाण-पैचाण सेठाणी सूं पुराणी ही । वा म्हारै रसोई बणावण री फुरती नै जाणती । घंटों रा काम मिन्टां में अ'र मिन्टां रो काम सैकिंडा में हुवै । सेठाणी नै देखनै ई हूं किनारै माथै आयो । सेठाणी नै म्हैं पूछ्यो—- कैयो सेठाणी, आज गंगा रै तट न्हावण नै आया कांई ?

सेठाणी बोली– नईं गोकुळसा थांरी खातर अठै आवणो पड़ियो ।

"हुकम करो, म्हारै लायक कांई काम है–" गोकुळसा पूछ्यो ।

अबार दो घंटे छेड़ै पांच सौ आदम्यां रो जीमण त्यार करणो है । न्यूतो तो सगळां नै दिरायो पण रसोइयो कोनी लाध्यो । अबै थी खुद कांई करो हो । कपड़ा पैर'र चालो म्हारै सागै— आ बात सेठाणी कैयी ।

गोकुळसा उथळायो—सेठाणी जी आप पधारो, हूं अबा'र आयो । दो तीन मगरमच्छां सूं कुस्ती लड़णी बाकी है । एक दो सूं तो लड़ लियो हूं ।

सेठाणी गोकुळसा री बात सुण'र मूंढ़ै में आंगळो राखली । फेरुं घर कानी रवाना हुयी ।

गोकुळसा सिड़या घाल दी । पण सेठाणी रै रसोई करण नै कोनी पूग्या । सेठाणी फेरुं सनेसा माथै सनेसा भेजावै । आखर सेठाणी रै हिरदै में उथळ-पुथळ मचगी । जीमण आळा आदमी अेक घंटे छेड़े आवण आळा हा । सेठाणी पाछी टैक्सी लेय'र गंगा रै तट माथै आयी । अबकैं गोकुळ सा न्हाय धोय'र विण नै त्यार मिल्या ।

सेठाणी– गोकुळ सा,वेगा-वेगा हालो । थां गत सो म्हें गत । म्हारी लाज थां रैं चरणां में । पांच सौ आदमियां रो जीमण नईं वण्यो तो सगळै कळकत्तै में म्हारो काळी मूंढ़ो हुय जासी । वेगा-वेगा हालो अ'र रसोई

बणासी।

अबकै गोकुळ सा बोल्या—क्यू फिकर करै सेठाणी देख तो सरी गोकुळ सा रा ठाठ। अबा'र रसोई बणै। मिनट मीक लागै। चालो घरै [illegible] माथै।

बात रै बीच में घूणो माथै बैठे अेक छोरै पूछ्यो क्यू गोकुळ सा, अेक घंटा में पांच सौ आदम्या री रसोई सार्वं बणगी?

गोकुळ सा बात नै काट'र बोल्या—अरे बावळा सुण जद सेठाणी रै घरै [illegible] सौ रसोई री वास्ते भट्टी खोदायोडी कोनी ही। म्हे फटा-फट [illegible] [illegible] खदाय'र भट्टी बाधी। सेठाणी नै कयो कै ए दो घासलेट तैल रा पीपा मगाय लै।

अेक जणो फेर बीच में बोल्यो—गोकुळ सा रसोई में घास लेट रै [illegible] री काई जरूरत पडी?

गोकुळसा उथळो दियो—थी [illegible] [illegible] [illegible] होवती। [illegible] सील लायग्यो। जद घासलैट रा पीपा मगावणा पड्या।

अबै दो भट्ट्या खुदायी दोनू माथै कढाया चढवायी। अेक भट्टी में [illegible] पीपो अूधवायो क' मोती पाक त्यार। दूजी भट्टी में फेर [illegible] [illegible] उथवायो। अबै पूडि्या-साग अ'र पकोडियां त्यार हुयगी।

म्हे सेठाणी नै कैयो:—लै सेठाणी आ मोतीपाक त्यार। पूडियां [illegible] [illegible]। आ अचार अ'र पकोडी त्यार।" सेठाणी देख्यो "क गोकुळ सा [illegible] रसोईयो। आ गोकुळ सा मवाल है या नै। [illegible] है [illegible] [illegible]। अेक घडी में रसोई त्यार कर'र थां म्हारी लाज राखी। [illegible] [illegible] पाली राम दीयो।

गोकुळ सा री ई बात नै सुण'र लै [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] देवता। [illegible] क औ पीवणिया री [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] अ'र [illegible] [illegible] ई [illegible] नै [illegible]।

सेठाणी आळी बात जद पूरी होय आवती जद दूजी बात [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

गेल पड़ग्या है। फेर कांई हो। गोकुळ सा रै भीगणिये री दूजो पानो खुल'र आगीजणो सरू होवतो।

गोकुळसा फैलता क' कलाणै राजा रो राज तो आपांरै रुपियां माथै ई चालतो। राजा म्हनै घणो मानतो। हूं जद राजा सूं ना मागी जी साहिबा सूं मिलण भैरण कोनी जावतो जद वै आपांरै मकानं म्हनै बुलावण रो संदेसो भेजता। राजा नै रुपिया री जरूरत पड़ती जद हूं आपांरी अंडोड़ी भगारी रै मांय सूं रुपियां लेजाय'र पुगावतो।

"गोकुळसा रुपिया इयै पोसाक मे देवण नै जावता कांई ?" आ कोयी नजी'क बैठ्यो मिनख वांनै पूछ लेवतो। आगै सुण'ण खातर सै' त्यार रैवता। वांरी गुल्छर्रा अर फर्रां नै जाणतै-बूझतै हुवै भी आणंद लेवता।

गोकुळसा उथळो देवता—आ पोसाक थोड़ी ई हुवै। राजा सूं मिलण जात'र घोड़ी माथै बैठ'र राजाशाही पोसा'क पैर'र माथै ऊपर पैचो केसरिया, कमर में दुपट्टै रो लपेटो लगाय'र हाथ में रुपियांरी थैली भुकाय'र जावतो।

आंधी रात रै समै जद सै नींद में सोवै बिण वखत हूं म्हारी पवन वेग घोड़ी माथै खटक-खटक, खटक-खटक करतो जाय'र खट्ट सूं राजा रै मैं'ल रै आगै ऊभतो। घोड़ी री अवाज राजाजी लख्योड़ा हा। वै राज मैं'ल में पोढ़योड़ा भी म्हारी घोड़ी री आवाज लख'र बा रै आवता। हूं हाथ जोड़'र कैवतो-खम्मा, अन्नदाता, कोंकर याद फरमायो।

अन्नदाता बोलता- गोकुळसा दस लाख रुपियांरी जरूरत है। थारै विना म्हांनै कुण देसी ? आ रजवाड़ै री लाज अबकै गोकुळ सा रै हाथ है।

गोकुळ सा उथळो देवता—घणो हुकम अन्नदाता। औ रुपिया सेवा में हाजर है। घोड़ी माथै लाद्योड़ी थैल्यां सूं अन्नदाता रै आगै ढिगा रा ढिगा लगाय'र कैयो और चाईजे तो हुकम करो।

अन्नदाता-बोल्या-गोकुळ सा ! थारै परताप म्हे तो जीवां हां।

सूं मेर मेल हानै रुपिया री मदद थारै निवा अर कुण देवै गोकुळमा-स्वा दियो, हुकम अन्नदाता आ सगळी आपरी ई माया है। म्हारो तन न धर धन सगळो आपरी सेवा मे लागसी। आप चावो जदै परख कर सो।"

"अन्नदाता री राणी सा बडा भला अर हिवाळू हा—आ गोकुळ सा भाखे। राणी सा म्हारी परममा रा अन्नदाता रै आगै नित हमेस पुळ लो- अै वातो कैवता-कैवता छोरा म्हानो निजर घुमाय'र देखता'क छोग ईं रै माथै मळ नो कोनो पड़ै।

इनै मैं गोकुळ मा रो मक्को भायलो आयग्यो। बिण कैयो कै गोकुळ मा पतंग होळ मे लड़रयो है कै मई। बिण पूछ्यो-गोकुळ सा थे थान नो धता। आखातीज माथै था भी कदै कन्ना (पतंग) उडाया हा। फेर कृपा, गोकुळ मा नै आपरी बात कैवण रो मोको मिळग्यो। आप मसारीं माथै हाथ फैर'र गोकुळ मा लारली याता याद करी। आप हाळो गुंजेरो मक्को (गुलछरो) न्हाखियो।

गोकुळमा कैयो:- अरे भई। वै दिन हा। जवानी रो जोस अ'र हौंस-हौंनूं शामिल हा। हूं आखा तीज रै दिन हमेसा री तरै भोर ई उठ'र पूरत मायरयो हो। म्हे देख्यो 'क ओ मन्नो अपा नै लूटणो चावै है। हू मोटो पाणी रो भरयोडो हो जकै मै भोळ'र दरबड़-दरबड़ बन्नै रै लारै दौड़ियो। कन्नो बठैई अटकग्यो। थोडी देर पे हू देखूं क बन्नो होळै-होळै हेठै उतर रयो है। म्हारो जोस ठंडो बरफ ज्यूं हुयग्यो। पण आगीनै भागणो छोड़ियो कोनी। आगै जाय'र देखू नो मालम हुयो 'कै दगाळी दूर गी ढाल मे बन्नो अटकयोडो हो। मूमर आप आई पछै मू नागो बणायो हो। म्हारा नो सिरै पूठण सामासा जद म्हे ओ दिन्न देख्यो।

गोकुळमा गो ओ सीमनो मक्को (गुलछरो) मुख'र गमला निज-लिपाय'र हसण लागग्या, पण कैन'ई बानै आ बात नो जणाई ती क गुर ई बडै बन्ना मूं'टै। आ जै बनावट री कोगोस करोबै नो सगळो गुड़-गोबर हुय जावै। दाल रो मजो नो दूसरी नाई ई आवै।

बूढां सागै बूढां अ'र जुवानां सागै जुवान हुया हा गोकुळसा। वै जद कदै चौक या गुवाड़ रै पाटै माथै मूंढ़ै उतारियोड़ै टाबर नै देखता तो फौरन आपआळी बात री करामात दिखावता।

अेक दिन अेक टाबर पाटै माथै अेकलो बैठो हो। होलै सीक गोकुळसा वीं रै कनै पूगिया अ'र कैयो-क्यूं भायला, आज कांई सोच करै? म्हांनै बताव तो सरी, फेर बात नै घुमाय'र कैयो—"अच्छा, हूं समझ्यो। थूं बीनणी रो सोच करै है। डर मत! हूं थारा ब्या'व करवा दे सूं। बीनणी रै कपड़ा लत्ता अर गैणा-गंठा सगळा आपां मेळसा। देख, आपां रै घर में बोत ऊंडो लळ भंवरो है। वीं रै मांयं अै चम-चमाती संदूकयां कपड़ां सूं तिड़क रयी है। गैणा-गंठा सोनेरा, खरा मोतियां री लड़, हीरां री वींट्यां चांदी री रमझोळ, चमक कळी, सोनेरी, मोतियांरी माळा सांकळ्यां, बंगड्यां अर जड़ाऊ गैणा सगळा पड़िया है। थारी बीनणी नै जिका-२ चोखा लागसी विसां सै राखमेळसा।" इतरी बातां सुणतै तो वो टाबर वांरी गुलछर्रा आळी बात माथै हंस-हंस'र लोट-पोट हुय जावतो। लजखाणो ई न्यारो हुवतो।

बात-बात माथै हंसावणरो जाणै ठेको लियोड़ो हो-असा हा गोकुळ सा। लंबा सीक, घुघराळै केशां आळा, मैंदियै गऊंरै रंग सिरखा शरीर वाळा धोती-चोळो धारणिया, दाढ़ी मूंछ्यां थोड़ी-थोड़ी राखण रै सोख वाळा हा। गोकुळ सा हुंकारो सगळां नै भरता नकारो कैने ई नईं। लांबी चौड़ी लच्छेदार बात्यां अ'र गुलछर्रा छोड़ण आळा आदमी हा गोकुळ सा। जिका अठै चाईजै, बांरी वठैई जरूरत हुवै। पतो नहीं देवलोक में है या सुरगलोक में, पण वांरा चौपनियां अठै अवस बाची जै। गोकुळ सा रा चौपनिया जद याद आवै जणै को ओ अधर बंब रा लोरा मारै या गुलछर्रा छोडणा सरू करै।

# बरफआळो

"बरफै ऽ ऽ अै ऽऽ ठडीठार बरफ, मजेदार बरफ, लच्छेदार बरफ" गूं ही पतळी-लाम्बी अवाज सुणीजती टाबर-टीगर रमता-खेलता थम जावता। मा'र अठीनै-वठी नै सूं बरफ आळै रै गाडै कनै भूग जावता। छोरा रो धीपारियो मड जावतो। कोई पइसं आळो, कोई दो पइसा आळो छतो बणायण साद कैवतो। कोई छोरो सरबत री सीसी मचकावतो अ'र कोई बरफ रा उछळता टुकडा भावण नै हाथ पसारतो। गाडै आळो उथपतो कोनी। बो अेक-अेक टाबर नै मुळकतो देखणो चावतो। ई'गानर बरफ गे छनो प्यार कर'र कैवतो– "लो बाबू गा।"

दूजोड़ो छोरो हत्तै मे बोल'र कैवै– ओ अेक पइसो री मनै जल्दी घनो दै, मीठो परवन देवै' घणो गारो, मीठो।

'हणै दूं अबार दूं मुन्ना।' गाडै आळो उथळो देवतो।

प्याम टाबर ल्यातो अ'र हाथ बरफ दसणी मांयै ल्यावो-ल्यावो करतो। गाय दै मिन्टा मे बाळका री भीड नै आपरै बस मे कर लेवतो।

बाळक देवता मरम हुवै। आ बात मानण आळो ही दूठमा।

बद रो ठिरणो, ओछो टाम्बा अर मोटी आख्यां, लीवो नाक अ'र मळ्या गरा थडू। दाडी नो आवण गे मुंडाउ दै कोनी उठतो। मायो अमीरै रमूं, धंरो हंसो घोटा काळा मोटी भरूड रा। दगाम्बो देह गीदवै आठो टाबर लाप। पर मू मरीब अर कोटै मनाब आठो हो मुटमा।

ई नो मीठो बोलो घूं टाबरां नो टोळी म्हारै माम्तोरो दूं दैवो।

मारठो दै दिसा मे हो टाबरा नै मूठमा रा हरमन हुवता। दाणै

जाणै ओ कठै रैवै, कांई काम करै, ई बात री टाबरां नै ध्यान राखण री जरूरत कोनी रैवती ।

अेक दिन गळी रै कोई ई आदमी इण नै पूछ्यो— अरे मूळसा गरमी-गरमी तो गाड़ो करै फेर सरदी अ'र बरखा रै दिनां में कांई धंधो-मजूरी चालै ?

मूळसा उथळो देवतो— हां, वावासा, मैं'नत अर मजूरी तो पेट खातर करणी ई पड़ै । नईं तो म्हारै भी परवार मोकळो है । खेती-वाड़ी खातर म्हारै गांव चल्यो जावूं वठै दो दाणा-धान निपजै जद ई परवार अ'र गिरस्त रो पालण करीजै ।

मूळसा जद आपरै परवार रो नाव लियो वीं वखत गळी रै वूढियै पूछ्यो—मूळसा था रै कित्ता टावर-टींगर है ?

'रामजी राजी है वावाजी, भगवान रा दियोड़ा तीन छोरा अ'र दो छोर्‌यां है ।"

"मां-वाप भी अठै है क्या ?"

"नईं··· वावासा ।"

"वै सगला कठै रैवै ?"

"उतार परदेस में ।"

वूढियै कैयो— चोखो, रामजी राजी हुवणा ई चाइजै ।

मूळसा मुळक'र उथळायो, आपरी किरपा अर माइतां रै पुन रो ई फळ है वावाजी ।

मूळसा वूढा वडेरां नै भी घणो आदर मान सूं देखतो । इयै सैर में मूळसा रै आ वात कोनी ही क' मां-मां रो जायो न देसड़लो परायो ।

मूंळसा गिरस्त रो पालण करणो आपरो पैलड़ो फरज समझतो । अणकारथ वोलण या ठालो वैठणै री वात तो माथै में ई कोनी लावतो ।

जद कदै इण नै वरा वरी आला ठाला वैठ्या या अठीनै-वठीनै डोला मारता दीखता, मूळसा विण नै उपदेस देणो सरू कर देवतो । चोखी अर मन भावती सीख देवतो ।

मिरचियो बडो मसखरो हो। वो मूळसा री सीख नै मजाक ई मानतो।

वो मूळसा नै अेक दिन कैयो, मूळसा ! जिको आदमी रोजीना कमावण अर खावणो ई सोचै वो मिनख थोडै ई हो वै, वो तो पसु……। पसु तो बळध ई घूमता रै वै। यूं भी आ वेल जूणी ई मोगै है।

मूळसा आ बात सुणर मधरो सीक मुळक्यो अर बोल्यो–वो मिनख जिको मिनख जमारो लैयर टालो बैठ्यो माख्यां मारै। वा सूं तो पसु चोखो जिको आपरै बाछां री ध्यान पूरो राखै। मालक नै देख'र हुर कै अर आप सारु फायदो बा नै पुगावै।

मिरचियै रा होस हवास उडग्या। वो भी उण दिन सूं आपरै धधे में लागग्यो।

पैडो करण में मूळसा कम कोनी उतरतो। रोजीना च्यार-पांच मील चक्कर तो काढतो ई। घर सूं हमेसा आपरै अणियोड़े रस्ते सूं ईज वैवतो रस्तो भी इसो जिकै सूं नगर्‌ सै'र रै खास-२ गळिया री परिक्रमा निकळ जावतो।

मूळसा मजूर पक्को। रोजीना रा छः सात रुपिया रै नैडा टक्का भेळा कर'र घर मे बडतो।

बेटा रै ब्याव री जिसी चिन्ता कोनी ही उसी बेट्यां री। ईं रै सुद रै सै'र मानि उत्तर परदेस मे दायजै (दहेज) री कुरीत चालै। अेक बेटी रा हाथ पीळा करण सारू ओछा सूं ओछा च्यार पांच हजार रुपिया खरच करणा ई पडै। जवाई नै पलग, रेडियो, साईकिल हाथ घड़ी अ'र घर गिरस्ती रो सामान भी देवणो पडै। मूळसा बाप रै बेटारो सगाई ब्याव सातर दायजो आपरै हाथां सूं कोनी लेणो चावतो।

मूळसा नै ध्यान तो दाळ रोटी रै अलावा किणी बात री कोनी हो। भणीज्योडो नहीं हो तो अनुभव सूं गुणीज्योडो अवस हो। सादो खावणो अ'र सादो पैरणो ई जिणै रै जीवण रो नेम। सरदी अर बरखा में आपरै सै'र अर गरमी में बीकानेर री गळिया में टाबरां नै खासी गरम, गोल्या

कुदावण अर मजूरी करण नान आवतोईज ।

चौतीणं कुंथेसूं कोट दरवाजे गैर-बाजार, अ'र फेरू सगळै सैं'र री चगरी निकाळतो आपरी आ पतील अ'र मीठी अवाज सुणावतो बरफं…ऽऽ ठंडीठार बरफ, मजेदार बरफ, लच्छेदार बरफ… वीं वखत खेलता कूदता, रोवता-हंसता अ'र नींद लेवता नान्हा बाळक मूळगा री बोली सुण'र गाडै कानी भागता ।

हाल भी कदै-कदास बाळकां रै मूंढ़ा मायसूं भी आ सुरीली अवाज सुणीजै "ठंडी ठार बरफ, लच्छेदार बरफ, मजेदार बरफ, । मिनखांरी माया अ'र विरखां री छाया ई चोखी लागै, बाकी ससार में कई सार कोनी ।

# कळी आळो

कळी करालो बरतणा रै कळी…ऽईई, कळी करालो बरतणा पै कळी… ऽऽई… ई, बडी पतळी अर सुरीलै कंठ सूं गळी-गुवाड़ में अवाज गूंजती। अवाज में जाणै मीठी मिसरी घोळ्योड़ी हुवै।

छोटै घरां सूं, मोटी हवेल्यां सूं, झूंपड्यां सूं अर टैणां री कोटड़्यां सूं पाछी अवाज जोर सूं आवती—ओ कळी आळा रै अठीनै आव रै, म्हारै घरै बुलावै।'

कळी आळो उथळो देवतो—आवूं बैन सा, ऊभारो मा सा डैरी भाईजी—अबार'र हाजर हुयो। घड़ीक ठैडै हाजर हुयो।

कळी आळो जिको गळो में बैठ जावतो बठै बरतणा रो ढेर लाग जावतो। पीतळ री थाळ्यां, पीतळरी परातां चोमुख अर कुमुख्यां कढायळियां कुड़छल्यां अ'र, तपेल्यां (बाटक्यां) रो ढिगलो सामै पड्यो रैवतो। कैरोई अेक नग कोनी गुमावतो। इसो नेक, नीयत आळो हो। सगळा लोग-लुगायां नै ई रै माथै पक्को विस्वास हो।

लाम-मूंघै सोलम रै कपड़े री तैमल लगायोड़ी, ऊपर टोलो कालो धोळो पैरणनै अर टायररी चप्पल पगां में पैरियोड़ो चौक चौक, गळी-गुवाड़, जणै जणै मजूरी वास्तै घूमतो रैवतो।

ना घणो लांबो ना ओछो गेंहू भरणै रंग रो तीखो-तीखो नाक, गाल रै साथै बढ्योड़ा दाढ़ी बढ़्योड़ी अ'र मूंछा कड़ कावरी ही। माथै ऊपर केस गिणतीरा दीसता बाकी सा टाट पड़्योड़ी ही कठै-कठैई माथै ऊपर काळा दाग कोयलै रा लाग्योड़ा साफ दीसता। धोळो पैरण आळो

सगळो ई धोळै स्याळा सूं भरयोड़ो आ मालम पालतो कै आगै मजूरी करतो-करतो ई आयो है ।

सागै रै माथै सूं फुटयोड़ो-टूटयोड़ो पीपो जिकै में कोयला, टाट रो टुकड़ो, नारेळरी जो'टो लनै रागतो । अेक डिब्बे में कळी रा चमकता दाणा अ'र नौसादर रो पाउडर । सागै ई वीं पीपे में लोहरै पाइप री छोटी भूंगळी, फूंकदेवण री चमड़ै आळी धोंकणी राखतो । जिकै मोहल्ले में कळी करणी हुवै वीं जगै अेक छोटो सो खाडो खुरपी सूं खोद'र त्यार कर लेवै । फेर विणनै पाणी अ'र कांकर मुट्ठ सूं भट्ठी री तरै वणाय'र मजबूत करै अर लोह री नळी आळी तरै बैठायर चमड़ै आळी धोंकणी लगावै । फेरू ऊपर सूं कोयला डाल'र हाथ सूं धोंकणी चलावै । जद धोंकणी सूं हवा सरू हुय जावै, वो वास्ती (आग) सुळगावण री त्यारी करै । कोयलां रै बीच थोड़ो सो उंगळी सूं खाडो बणाय'र बीच में नारेळरी जोटी राख दै । चोळै री जेब सूं अेक सिगरट माचस निकाळ'र सुळगावै अ'र विण सूं ई नारेळरी जो'टी । वास्ती सुळगणै रै पाछै सिगरैट री कस खींचतो रैवतो अ'र कळी रो काम जारी राखतो । कळी आळो बड़ो मैं'नती हो ।

घरै कदै निठल्लो कोनी बैठतो । हाथ माथो हुवतो जणै ई खुड़ो टिकाय'र बैठतो नीं तो आपरी मजदूरी खातर खूब चक्कर लगावतो । वरतणां माथै कळी इतरी फूटरी अ'र चमकदार करतो जाणै सगळा वरतण अवा'र ई चांदी री खाण मां'सूं निकाळ्या हुवै । वीं रै शरीर में गजबरी फुरती । हाथ फटा-फट इसा चलावतो जांणै कोई मशीन चाली हुवै । ललाट माथै पसीणै रा वाळा वैवण लागतो । कुरतो भीज'र गीलो हुय जावतो । विण जगै आ कैवत याद आवै क' कमावण में अेडी सूं चोटी ताईं पसीणो आजायां करै ।

कळी आळो कोरो मजदूर ई कोनी हो संगीत कळा प्रेमी अ'र सुरीलै कंठां सूं गावणियो । सनीमा देखण रो घणो कोड । सनीमां रै अेक्टरां री नकल भी विणनै आवती । आ वात जद मालम पड़ी क'

अेक दिन म्हारी गळी सूं 'कळी करालो बरतणा पै कळी ''' ई ई ई अवाज देवतो जाय रयो हो। अेक दरजण बरतणा रै कळी करावण सारू तिणनै हेलो मारयो।

म्हें पूछ्यो अरे कळी आळा, अेक रुपियैरा कित्ता नग माथै कळी हुई ?

कळी आळो–बाबूजी, रुपियैरा च्यार।

"बोत मुहगा करौ, भायला ! रुपियैरा छः नग तो करदै।"

"नई बाबूजी कोनी हुवै, कळी रा दाम बोत बदग्या। म्हांनै कळी सस्ती कोनी पड़ै।

म्हें कैयो–अरे म्हारै जिसा पैसा सस्ता आवै। रात दिन लिखण नै बैठ'र मैनत करां जै जद कठैई पैसा निपजै।

बो बोल्यो–बाबूजी, आप काई लेखक हो या दफ्तर में बाबू ?

"बाबू नई भाई, वाण्या लिखणी पड़ै, गीत अ'र कवितावां लिखणी पड़ै। फेर' अखबार में छपै।

अच्छा समझग्यो बाबूजी। आप लेखक अ'र कवि हो। हूं आपरै अेक रुपियै रा पांच नग बरतणा रै कळी कर देसूं। बोत बढ़िया अ'र छः महीना ई कळी कोनी उतरै इसी काम करसूं बाबूजी। बो कैय'र आपरै माथै सामनो मगळो समान हेठे उतारियो।

हूं घरै जाय'र सैंग बरतण बाम्बण बारै लायो। कळी आळो तिण रै माथै पटापट कळी करतो मन करै अ'र मस्ती सूं झूम-झूम'र गीत गावै। कदै हिचो उडूं निर्धिन कर कदै ठेठ मारवाड़ी रा लोक गीत।

म्हें पूछ्यो–अरे कळी आळा थारा मीठा-२ गीत कठै सूं याद करिया है ? बो बोल्यो–बाबूजी म्हें धणाई मनोमा देख्या है। मनै गीत गावण अ'र बाजो बजावणरो बोत सोक है।

पंर बोत से काम करर'र कैवे बाबूजी, म्हे मनीमा मांनिर आठ बाव्या भी लिखो है। दिन के बोत भी।। बै म्हारी बाम्बा री पोथी छपावो है। अेक राजेश्वर के नेह की करी।

म्हूं पूछ्यो– आं गरचो क्यूं करियो ? उथळो मिल्यो–बाबूजी अेक डायरेक्टर नै म्हूं लिख्यो क' म्हारी कांण्यां मनीमा में लेवो, पण विण छापायोड़ी पोथी मांगी । रुपिया अेक हजार लगाय'र पोथ्यां छपायी । विण नै भेजी पण कोई उथळो कोनी मिल्यो ।

आज माथै कर्योड़ा रुपिया मजूरी सूं उतार रह्यो हूं । कळी आळो दूसरो भोळो साफ हिरदै आळो हो ।

कळी होयगी जद हूं च्यार रुपिया देय'र बरतण लेजावण लाग्यो । विण सर्मे थीं तीन रुपिया आपरै हक अर मैं'नत रा लीना, अेक रुपियो पाछो कर दियो । जावतै सर्मे आ कैयग्यो क' बाबूजी आपरा रुपिया अर म्हारी मैं'नत रा रुपिया बड़ा दोरा कमाईजे ।

"अच्छा जै रामजी री" आ कैय'र विण कैयो, बाबूजी, जीवांला तो तो फेर मिलां लां । आपरो रस्तो नापियो ।

बोत दूर गळी री मोड़ कनै अवाज सुणीजी कळी करालो बरतणां पै कळी ईई···ऽऽ ।

भोळो भाळो, सीधो-सादो, दिन-रात खट्'र मैं'नत करण आळो कळी आंळो पतो नी जीवै है या कोनी, पण मीठो-२ ओळूं अ'र मीठी सुरीली अवाज आज ताईं कान में गूंजै । कळी करालो बरतणां पै कळी ऽ ई ई ऽ– ।

● ● ●